सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-43, अंक-01, कुल पृष्ठ-36, आश्विन-कार्तिक, विक्रम सम्वत् 2082, अक्टूबर, 2025

संघ शताब्दी

सेवा के 100 साल

जयदत्त केंद्र पर चिकित्सा शिविर

गत 20 सितंबर को सुपोषित भारत के अंतर्गत दिल्ली सेवा भारती के पोषण सप्ताह में दक्षिणी विभाग के लाजपत जिले में जयदत्त केंद्र पर चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। इसमें डॉ मनीषा जी एवं डॉ जायत्री जी के साथ जिला कार्यकारिणी सदस्य डाइटीशियन ललिता जी भी उपस्थित रहीं। चिकित्सकों द्वारा लगभग 40 से अधिक बच्चों एवं महिलाओं का परीक्षण किया गया एवं दवाइयाँ भी दी गई।

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर

गत दिनों दिल्ली सेवा भारती दक्षिणी विभाग के लाजपत जिले में अशोक बिंदुसार सेवा बस्ती में जीएएनसीएएस फाउंडेशन के साथ प्रात: 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। अमर कॉलोनी नगर के प्रमुख व्यवसायी श्री अशोक मेहता जी के सहयोग से पी. एस.आर.आई. के चिकित्सकों एवं मैक्स अस्पताल के पैथालॉजी विभाग की ओर से नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाएं दी गई। स्वास्थ्य परामर्श के साथ ही कई प्रकार के मेडिकल टेस्ट भी करवाए गए। सेवा बस्ती से सभी आयु वर्ग के लगभग 100 लोगों ने इसका लाभ उठाया। जिले के कार्यकर्ताओं के साथ जिला सेवा प्रमुख श्री जयकरण जी और दक्षिणी विभाग अध्यक्ष श्री अनंगपाल जी, विभाग संगठन मंत्री श्री पन्नालाल जी एवं विभाग मंत्री श्री विनोद जी भी उपस्थित रहे।

होम्योपैथिक क्लीनिक का शुभारंभ

सेवा भारती लाजपत जिला दक्षिणी विभाग में 6 सितंबर की सुबह 10:30 बजे सेवार्थ होम्योपैथिक क्लीनिक का शुभारंभ दयानंद कॉलोनी में किया गया। प्रतिदिन शाम 5 बजे से 7 बजे तक डॉक्टर जयत्री सिंगल जी अपनी सेवायें देंगी। विभाग अध्यक्ष श्री अनंगपाल जी के साथ स्थानीय वरिष्ठ नागरिक श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा जी के द्वारा इसका शुभारंभ किया गया। श्रीमान दीनदयाल जी दयानंद शाखा से भी उपस्थित रहे। जिला मंत्री एवं जिले के कार्यकर्ताओं के साथ विभाग से भी विभाग मंत्री श्री विनोद जी एवं संगठन मंत्री श्री पन्ना लाल जी की उपस्थिति रही। समाज से भी कुछ लोग जुड़े। श्री काशीनाथ जी, श्री प्रमोद जी एवं श्री विजय जी का विशेष सहयोग रहा। चिकित्सा परामर्श के साथ दवाई भी उपलब्ध करवाई जाएगी जिसका लाभ आसपास की सेवा बस्तियों को मिलेगा।

इनर व्हील क्लब ने छात्रावास को दिया राशन

गत दिनों शाहदरा जिले में स्थित विवेकानंद धाम / स्व. श्री सुरेश चन्द गोयल छात्रावास में 'इनर व्हील क्लब' आई पी एक्सटेंशन से बहनों का प्रवास रहा। उन्होंने छात्रावास के बच्चों से बातचीत की। 'इनर व्हील क्लब' की तरफ से छात्रावास को राशन दिया गया और भविष्य में भी सहयोग करने का आश्वासन मिला। इस अवसर पर विभाग कोषाध्यक्ष श्री सुरेश जी व गांधीनगर जिले से सह मंत्री श्री हरेंद्र जी की उपस्थिति रही।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-43, अंक-01, कुल पृष्ठ-36, अक्टूबर, 2025

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
सौ वर्ष की साधना		7
'व्यक्ति निर्माण की यज्ञ वेदी हैं शाखाएं'		12
देवरस जी के सपनों को साकार करती सेवा भारती	आचार्य मायाराम पतंग	13
अंधकार को दूर करने का त्योहार है दीपावली	स्वाति पाठक 'स्वाति'	15
मोल प्रदीप्त दीपक का है, बुझे दीयों का नहीं	डॉ. प्रणव पंड्या	17
सामूहिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता का दर्शन	श्वेत कमल	20
करवा चौथ व्रत	स्वाति पाठक 'स्वाति'	22
राजू की 'मां'	राजेंद्र मित्तल	24
मेरा घर ही स्वर्ग है	गंगा प्रसाद सुमन	25
सेवा से बढ़ता जा रहा है यशपाल जी का यश	अंजू पांडेय	26
मुझे सेवा भारती ने संवारा	राज मंगल	28
मनाया गया 'सुपोषित भारत सप्ताह'		29
मंगोलपुरी में ईएनटी वार्ड का शुभारंभ		30
मना शिक्षक दिवस		31
उन्नति की ओर अग्रसर हिमांशु और आरव		32
आनंद विहार में कार्यकर्ता मिलन		33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

46 वर्ष की हुई सेवा भारती

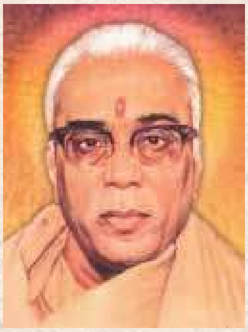

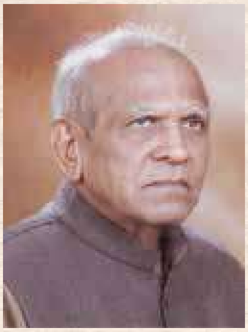

सेवा भारती के प्रेरणास्रोत (बाएं से) पूज्य बालासाहब देवरस जी, माननीय अशोक सिंघल जी और श्री विष्णु कुमार जी

समग्र विकास के लिये एक दृष्टि, एक लक्ष्य रखते हुए सेवा भारती समरसता के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ रही है। जन-कल्याण ही इसका लक्ष्य है जन-कल्याण ही इसका साधन है। सेवा भारती की सोच में आग्रह नहीं, छोटा-बड़ा नहीं, भेद-भाव नहीं यह तो प्रेम का चिन्तन है, प्रेम से ही आगे बढ़ेगा।

यह बहुत ही गौरव की बात है कि हम सबकी सेवा भारती इस वर्ष 46 वर्ष की हो गई। दिल्ली में सेवा भारती की विधिवत स्थापना महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर, 1979 को हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य बालासाहब देवरस जी और माननीय श्री अशोक सिंघल जी की प्रेरणा से सेवा भारती का जन्म हुआ। इन दोनों महानुभावों के आदेश पर संघ के कर्मठ प्रचारक श्री विष्णु कुमार तथा अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों से बालवाड़ी और बाल संस्कार केन्द्र सेवा बस्तियों में शुरू हुए। देखते ही देखते समर्पित कार्यकर्ताओं की टोलियाँ दिल्ली की विभिन्न झुग्गी बस्तियों में सेवा और समर्पण की ज्योति लेकर समरसता और सद्भाव के लक्ष्य की ओर बढ़ने लगीं। सेवा के इन विविध कार्यों ने बस्ती निवासियों के बीच स्थायी प्रभाव छोड़ा जिसके परिणामस्वरूप बस्ती में सम्पर्क बढ़ा, पहचान बढ़ी, प्रेम बढ़ा, साधन मिलते गये, कार्य बढ़ते गये।

व्यवहार की शुद्धता और विचार की पवित्रता ने राष्ट्रनिष्ठा का ऐसा आत्मीय वातावरण बनाया कि बस्तियों में शिक्षा, संस्कार, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी योजना का विस्तार के लिये बालवाड़ी, संस्कार केन्द्र, सिलाई केन्द्र, कोचिंग सेन्टर जैसे प्रकल्पों की शुरुआत की गई। प्रौढ़ शाखाओं के माध्यम से अनेक जीवनव्रती कार्यकर्ता इस दिशा में सक्रिय हुए। विभिन्न केन्द्रों को भी जोड़ा गया। जन सामान्य में तीज त्योहार, राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर उत्सव और उल्लास से भरपूर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गये जिसमें बस्ती का प्रत्येक वर्ग भागीदारी निभाने लगा।

सेवा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग करते हुए सेवा भारती सेवाधाम विद्यामन्दिर, गोपालधाम जैसे शिक्षा के प्रकल्पों द्वारा निर्धन परिवारों के मेधावी बालकों को शिक्षा और संस्कार देकर उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। सेवाधाम से पढ़ कर निकले छात्र अपने गाँव, अपने प्रदेश में लौटकर अपने समाज को शिक्षित करने में जुट गये हैं। साथ ही उच्च पढ़ाई कर डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, आईएएस आदि सेवाओं तक पहुँच गये हैं।

स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रोजेक्ट के अन्तर्गत अनेक प्रकार के कार्य जैसे बिजली सुधार, दरी बुनना, मोमबत्ती एवं चॉक बनाने की कला कचरा बीनने वाले बालकों को सिखाई जाती है।

बालवाड़ी में बच्चों को मिलता दुलार और संस्कार

सेवा भारती के एक औषधालय से दवा लेता मरीज

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में चिकित्सा वाहनों के द्वारा चल एवं अचल केन्द्रों से बड़ी संख्या लोग लाभान्वित हो रहे हैं। यह सेवा बस्तियों में विशेष लोकप्रिय है। निश्चित दिन, निश्चित स्थान रोगियों की भीड़ जुड़ जाती है जिसे डॉक्टर एवं कार्यकर्ता का धैर्य ही संभाल पाता है। ताहिरपुर और सीमापुरी के बीच स्थित कुष्ठाश्रम की छह बस्तियों में विभिन्न प्रकल्प चलाये जा रहे हैं। 20 वर्ष की खोज के बाद डॉ. ध्रुव चक्रवर्ती ने ऐसी होमियोपैथिक दवा निकाली है जिसके प्रयोग से कुष्ठ रोगियों के विभिन्न अंगों में चेतना आने लगी है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में मातृछाया की उपलब्धि भी अपूर्व है। दिल्ली के दो क्षेत्र मियांवाली नगर तथा पहाड़गंज में अस्पतालों, पुलिस थानों से प्राप्त पितृविहीन बच्चों को मातृछाया के अन्तर्गत उनकी देखभाल करते हुए कानूनी प्रक्रिया से गोद दिया जाता है।

सेवा के विभिन्न प्रकल्पों द्वारा सम्पर्क और जन साधारण के बीच स्वस्थ ताल-मेल शुरू हुआ है। एक वर्ग बिना किसी अहंकार के अभावों की भरपाई करते हुए देने की स्थिति में है तो दूसरा लाभ लेने की स्थिति में। आदान-प्रदान का यह सिलसिला सामाजिक सौहार्द और सद्भाव का सेतु बनाने में जुट गया है। इस कार्य में महिलाओं की भागीदारी विशेष उल्लेखनीय है। शिक्षित सम्भ्रांत परिवारों की महिलायें अपनी पिछड़ी बहनों को साथ लेकर चल पड़ी हैं। पारिवारिक हिंसा, नशाखोरी, जुआ जैसी बुराइयों को महिलायें स्वयं एकजुट होकर रोकने में समर्थ हो रही हैं। प्रतिवर्ष 14 जनवरी से 31 जनवरी तक महिला सशक्तिकरण पखवाड़ा बस्ती-बस्ती में मनाया जाता है जिसके माध्यम से महिलाओं में स्वच्छता, संस्कार, मातृत्व एवं शिशु कल्याण तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता बढ़ी है। सिलाई प्रशिक्षण के अतिरिक्त मेंहदी लगाना, रूप सज्जा, किशोरी विकास कार्यक्रम तथा सामूहिक विवाह की व्यवस्था ने युवतियों में आत्मविश्वास और स्वावलम्बन की वृद्धि की है। अपनी जिन्दगी में आये इस बदलाव के लिये वे सेवा भारती का अहसान मानती हैं। ''महिला समिति'' के रूप में नारी-जागरण का यह प्रवाह दिल्ली की अधिकतम सेवा बस्तियों में अपना सार्थक असर दिखा रहा है। भजन-कीर्तन-हवन के नियमित कार्यक्रमों ने बस्ती की भागीदारी बढ़ाकर आस्था और निष्ठा का भाव जगाया है। उनमें राष्ट्रीयता जाग रही है, वे भी समाज के लिये सोचने लगे हैं। भविष्य में इस चेतना को साधन और साध्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य बालासाहब देवरस जी और माननीय श्री अशोक सिंघल जी की प्रेरणा से सेवा भारती का जन्म हुआ। इन दोनों महानुभावों के आदेश पर संघ के कर्मठ प्रचारक श्री विष्णु कुमार तथा अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों से बालवाड़ी और बाल संस्कार केन्द्र सेवा बस्तियों में शुरू हुए।

किशोरी विकास के लिए आयोजित एक कार्यक्रम

सहयोग लेकर अधिकतम लोगों के कल्याण के लिये दिल्ली के विशाल भौगोलिक ढांचे के अनुरूप संगठन को दृढ़ बना रही है। बस्ती की भागीदारी बढ़े, अधिक से अधिक कार्यकर्ता जुड़े, समाज एक-दूसरे के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझे, इस दिशा में परिवार के साथ गप-शप करते हुए एक प्याली चाय पीने की व्यवहार आपसी समरसता बढ़ा रही है और दूरियाँ दूर हो रही हैं। इस प्रयोग का लोगों ने स्वागत किया है। सेव कार्यों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ गुणवत्ता में सुधार समय की माँग है। हर विभाग में आदर्श

मानकर हर बस्ती, हर घर में पहुँचाना है। तभी वे स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में समर्थ हो सकेंगी।

निर्माण और सृजन जीवन के हाथों से होता है, जीवन से बचकर नहीं। 46 वर्ष की मेहनत और तपस्या ने संस्था में नई चुनौतियों का सामना करने का साहस पैदा किया है। समाज के विभिन्न वर्गों में सेवा कार्यों ने अपना सकारात्मक प्रभाव डाला है जिससे युवा वर्ग भी अछूता नहीं है। इस समय अनेक कम्प्यूटर केन्द्र चल रहे हैं जहाँ ट्रेनिंग के साथ-साथ अपनी जमीन से जुड़े संस्कारों की चर्चा भी की जाती है। बस्ती के युवक-युवतियाँ अच्छी संख्या में इस प्रकल्प का लाभ उठा रहे हैं। प्रतियोगिता और स्पर्धा के युग में 'नर सेवा नारायण सेवा' के रचनात्मक आंदोलन से प्रभावित होकर अनेक प्रोफेशनल युवक युवतियाँ ''सारथी'' के रूप में सहभागी बन कर सेवा कार्यों को नई सोच, नई दिशा देने को तत्पर हो रहे हैं। वे बस्तियों में जाकर खेलकूद, चित्रकला, विज्ञान तथा तकनीकी सूचनाओं के माध्यम से वातावरण को नई ऊर्जा दे रहे हैं। वास्तव में अनुपयोगी को उपयोगी, निर्बल को सबल बनाने के लिये हर स्तर पर परिष्कार और साज संभाल जरूरी है। इस क्रम में सेवा भारती समाज के अधिकतम लोगों से

सेवा भारती की सोच में आग्रह नहीं, छोटा-बड़ा नहीं, भेद-भाव नहीं यह तो प्रेम का चिन्तन है, प्रेम से ही आगे बढ़ेगा। इसके मार्ग में चुनौतियाँ हैं, संघर्ष नहीं, पड़ाव हैं, रुकावटें नहीं। यह जनता के निमित्त जनता का ही मार्ग है। जिसके कदम-कदम पर आशा है, विश्वास है, सेवा है, समर्पण है।

बस्ती-आदर्श प्रकल्प का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बस्तियों को स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर बनाने के लिये कौशल विकास की जरूरत महसूस की जा रही है। स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिये योगाभ्यास-प्राणायाम को सर्वसुलभ बनाने की भी योजना है। साथ ही उनमें व्यावहारिक जागरूकता भी बढ़ानी होगी तभी वे विकास के प्राप्त अवसरों का, सरकारी योजनाओं का लाभ उठा कर अपने हित-अहित को भली प्रकार सोच सकेंगे।

इस प्रकार समग्र विकास के लिये एक दृष्टि, एक लक्ष्य रखते हुए सेवा भारती समरसता के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ रही है। जन-कल्याण ही इसका लक्ष्य है जन-कल्याण ही इसका साधन है। सेवा भारती की सोच में आग्रह नहीं, छोटा-बड़ा नहीं, भेद-भाव नहीं यह तो प्रेम का चिन्तन है, प्रेम से ही आगे बढ़ेगा। इसके मार्ग में चुनौतियाँ हैं, संघर्ष नहीं, पड़ाव हैं, रुकावटें नहीं। यह जनता के निमित्त जनता का ही मार्ग है। जिसके कदम-कदम पर आशा है, विश्वास है, सेवा है, समर्पण है। यह यात्रा व्यक्ति को परिवार से, परिवार को बस्ती से, बस्ती को प्रांत से जोड़कर राष्ट्र को परम वैभव तक पहुँचाने के विधान की संयोजना रच रही है- जहाँ सबका मंगल ही मंगल है। ❐

सौ वर्ष की साधना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितम्बर, 1925 (विजयादशमी, विक्रम संवत् 1982) को हुई। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण हिन्दू समाज का संगठन था। तब से सहयोग और सहभागिता के बल पर संघ का कार्य निरंतर बढ़ता गया है। प्रतिदिन चलने वाली शाखाओं के माध्यम से बालक, युवा और प्रौढ़ अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव करते हैं, जिससे समाज में संघ की शक्ति और स्वीकृति सतत बढ़ रही है। आज 100 वर्ष की इस यात्रा ने समाज में उत्सुकता जगाई है कि लोग संघ कार्य को जानें और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उससे जुड़ें।

डॉ. हेडगेवार जन्मजात देशभक्त थे। अंग्रेजों की गुलामी उन्हें गहरी चुभती थी, पर वे मानते थे कि केवल स्वतंत्रता प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। उन्होंने सोचा कि भारत गुलाम क्यों बना, इसका मूल कारण खोजकर उसका समाधान करना होगा। आत्मजागृति, स्वाभिमान, एकता, अनुशासन और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण को उन्होंने आवश्यक माना। इसी उद्देश्य से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहते हुए भी उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।

अब तक के सरसंघचालक

डॉ. हेडगेवार

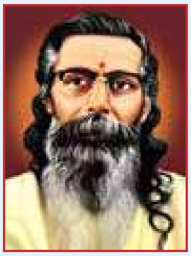

श्रीगुरुजी

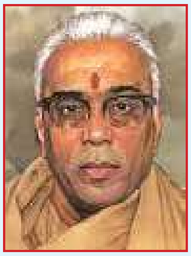

श्री बालासाहब देवरस

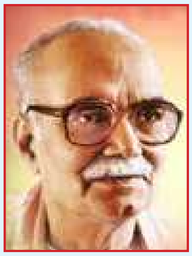

श्री रज्जू भैया

श्री कुप्. सी. सुदर्शन

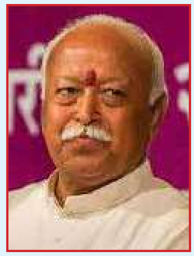

श्री मोहनराव भागवत

पंच परिवर्तन

संघ का अनुभव है कि समाज-परिवर्तन का महान कार्य केवल कुछ लोगों से नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज की शक्ति से ही संभव है। इसलिए आगामी वर्षों के लिए संघ ने समाज-परिवर्तन को पंच-परिवर्तन के रूप में समग्रतापूर्वक देखा है। इसका आशय है कि समाज जीवन में समयानुकूल परिवर्तन लाकर हम राष्ट्रहित में अपने जीवन को ढालें।

सामाजिक समरसता

हिन्दू समाज की स्वाभाविक विशेषता समरसता रही है। किंतु समय के साथ जाति-भेद, ऊँच-नीच और अस्पृश्यता जैसी विकृतियाँ उत्पन्न हुईं, जिससे समाज के कुछ वर्गों को अन्याय और अपमान सहना पड़ा। आज यह बुराई त्याज्य है और इसका समाप्त होना अत्यंत आवश्यक है। संतों, गुरुओं और समाजसुधारकों ने इसे पाप और अमानवीय परंपरा बताया। संघ का आग्रह है कि समाज में सब समान हैं-इस भावना से सभी को जोड़कर एकत्व की स्थापना की जाए।

पर्यावरण संरक्षण

मानव जीवन पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) पर आधारित है। इनका संतुलन बिगड़ने से ही आज की पर्यावरणीय चुनौतियाँ खड़ी हुई हैं। भारतीय परंपरा में पेड़-पौधों और प्रकृति की पूजा का जो भाव है, वही सच्चे अर्थों में पर्यावरण संरक्षण का आधार है। जल-बचत, वृक्षारोपण, स्वच्छता और ऊर्जा-संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यही भाव नव राष्ट्र-निर्माण की आवश्यकता है।

कुटुंब-प्रबोधन

कुटुंब समाज की सबसे छोटी लेकिन सबसे प्रभावी इकाई है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में परिवार को आनंद और समृद्धि का केंद्र बताया गया है। परिवार में हिन्दू जीवन-शैली, संस्कार और कर्तव्यों का पोषण कर हमवसुधैव कुटुम्बकम्की भावना को जीवित रखते हैं। संघ का मानना है कि स्वस्थ परिवार से ही स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

स्व-आधारित जीवन

विदेशी दासता से मुक्त होकर स्वभाषा, स्वभूषा, स्वसंस्कृति और स्वदेशी उद्योगों पर बल देना आवश्यक है। आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से अलग होना नहीं, बल्कि स्वाभिमान के साथ व्यापार और उत्पादन करना है। रक्षा, विज्ञान और तकनीक में आत्मनिर्भर भारत-जैसे डीआरडीओ, इसरो, परम सुपरकंप्यूटर और कोविड वैक्सीन के उदाहरण-स्व-आधारित जीवन की दिशा में प्रेरणास्रोत हैं। स्थानीय व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर हमें रोजगार और आत्मनिर्भरता दोनों को बढ़ाना है।

नागरिक कर्तव्यबोध और शिष्टाचार

संविधान ने हमें अधिकार दिए हैं, लेकिन साथ ही मौलिक कर्तव्यों का भी आग्रह किया है। राष्ट्रभक्ति केवल बड़े अवसरों पर नहीं, बल्कि दैनिक आचरण में झलकनी चाहिए-पानी-बिजली की बचत, ईंधन का संयमित उपयोग, अनुशासन, ईमानदारी और शिष्टाचार भी राष्ट्रसेवा हैं। अच्छे और जिम्मेदार नागरिक ही किसी भी देश की आंतरिक शक्ति और स्थायी विकास का आधार होते हैं। ❐

श्रीगुरुजी के अनुसार, ''विजयादशमी के शुभ प्रसंग पर स्वर्गीय डॉक्टर हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना कर विश्रृंखलित हिंदू समाज को संगठित करने का कार्य प्रारंभ किया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भगवा ध्वज के नीचे संपूर्ण हिंदू समाज को संगठित करने का निरंतर कार्य कर रहा है। आज चारों ओर भीषण परिस्थिति उपस्थित है। ऐसी अवस्था में संगठन के बिना बचना संभव नहीं है। हजारों वर्ष की अवनति चुटकी बजाते दूर नहीं हो सकती, यह संघ जानता है। पर इससे हम निराश नहीं हैं। हमारा पूर्ण विश्वास है कि हिंदू समाज संगठित होकर अपने पूर्व गौरव को अवश्य प्राप्त करेगा।''

संघ के प्रारंभिक 15 साल

डॉ. हेडगेवार के निधन के तेरहवें दिन यानि 3 जुलाई, 1940 को नागपुर में डॉ. साहब की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। सरसंघचालक के नाते श्रीगुरुजी ने डॉ. हेडगेवार जी को याद करते हुए बताया कि डॉ. साहब के कार्य की परिणति पंद्रह वर्ष में एक लाख स्वयंसेवकों के संगठित होने में हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संदर्भ में दत्तोपंत ठेंगड़ी कहते हैं, ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण किसी भावना या उत्तेजना में आकर नहीं हुआ है। श्रेष्ठ पुरुष, जन्मजात देशभक्त डॉक्टर जी, जिन्होंने बचपन से ही देशभक्ति का परिचय दिया, सब

प्रकार का अध्ययन किया और अपने समय में चलने वाले सभी आंदोलनों और कार्यों में हिस्सा लिया, कांग्रेस और हिंदू सभा के आंदोलनों में भाग लिया, क्रांतिकार्य का अनुभव लेने के लिए बंगाल में भी रहे, उन्होंने गहन चिंतन के पश्चात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की योजना बनाई।''

नागपुर के बाद 1929 में वर्धा और फिर 1932 में पुणे में संघकार्य की शुरुआत हुई। जल्दी ही महाराष्ट्र के अन्य शहरों में भी विस्तार होने लगा। जहाँ 1929 में शाखाओं की संख्या 37 थी, वह 1933 तक 125 हो गई। डॉ. हेडगेवार एक पत्र के माध्यम से लिखते हैं, ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य हमने किसी एक नगर या प्रांत के लिए आरंभ नहीं किया है। अपने अखिल हिंदुस्थान देश को यथाशीघ्र सुसंगठित करके हिंदू समाज को स्वसंरक्षण एवं बलसंपन्न बनाने के उद्देश्य से इसे प्रारंभ किया गया है।''

संघ का यह विचार और विस्तार दोनों ब्रिटिश सरकार के लिए अनुकूल नहीं थे। दिल्ली में ब्रिटिश अधिकारी एम. जी. हालौट द्वारा मध्य प्रांत सरकार पर दबाव बनाया गया कि वह संघ को रोकने का प्रयास करे। आखिरकार दिसंबर, 1933 में मध्य भारत के शिक्षकों और निकायों के कर्मचारियों को संघ के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने से रोक लगा दी गई। मार्च, 1934 में प्रतिबंध के विरोध में एक कटौती प्रस्ताव विधानसभा के समक्ष रखा गया। इसके पक्ष में टी.एच. केदार, आर.डब्ल्यू. फुले, रमाबाई तांबे, बी.जी. खापर्डे, आर.ए. कानिटकर, सी.बी. पारेख, यू.एन. ठाकुर, मनमोहन सिंह, एम.डी. मंगलमूर्ति, एस.जी. सपकल और डब्लू.वाई. देशमुख सहित अन्य सदस्यों ने अपनी बात रखी। संघ की अवधारणा का इस प्रकार समर्थन अभूतपूर्व था। बहस के अंत में ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबंध वापस ले लिया गया।

डॉ हेडगेवार के निर्देशन में देशभर में प्रवास होने लगे। भाऊराव देवरस (लखनऊ), राजाभाऊ पातुरकर (लाहौर), वसंतराव ओक (दिल्ली), एकनाथ रानाडे (महाकौशल), माधवराव मूळे (कोंकण), जनार्दन चिंचालकर एवं दादाराव परमार्थ (दक्षिण भारत), नरहरि पारिख एवं बापूराव दिवाकर (बिहार) और बालासाहब देवरस (कोलकाता) ने संघ कार्य का विस्तार करना शुरू किया।

परिणामस्वरूप, लगभग एक दशक बाद देशभर में 600 से अधिक शाखाएँ और लगभग 70,000 स्वयंसेवक नियमित अभ्यास करने लगे। 1939 तक दिल्ली, पंजाब, बंगाल, बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रांत, बंबई (वर्तमान महाराष्ट्र और गुजरात) में संघ शाखाएँ लगनी शुरू हो गईं।

डॉ. साहब 15 वर्ष तक संघ के पहले सरसंघचालक रहे। इस दौरान संघ शाखाओं के द्वारा संगठन खड़ा करने की प्रणाली डॉ. साहब ने विचारपूर्वक विकसित कर ली थी। संगठन के इस तंत्र के साथ राष्ट्रीयता का महामंत्र भी बराबर रहता था। वे दावे के साथ आश्वासन देते थे कि अच्छी संघ शाखाओं का निर्माण कीजिए, उस जाल को अधिकतम घना बुनते जाइए, समूचे समाज को संघ शाखाओं के प्रभाव में लाइए, तब राष्ट्रीय आज़ादी से लेकर हमारी सर्वांगीण उन्नति करने की सभी समस्याएँ निश्चित रूप से हल हो जाएँगी। इन वर्षों में जिनसे भी उनका संपर्क हुआ, उन्होंने उनकी और उनके कार्यों की हमेशा सराहना की। जिनमें महर्षि अरविंद, लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय, विनायक दामोदर सावरकर, बी. एस. मुंजे, विट्ठलभाई पटेल, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और के. एम. मुंशी जैसे नाम प्रमुख थे।

> **डॉ हेडगेवार के निर्देशन में देशभर में प्रवास होने लगे। भाऊराव देवरस (लखनऊ), राजाभाऊ पातुरकर (लाहौर), वसंतराव ओक (दिल्ली), एकनाथ रानाडे (महाकौशल), माधवराव मूळे (कोंकण), जनार्दन चिंचालकर एवं दादाराव परमार्थ (दक्षिण भारत), नरहरि पारिख एवं बापूराव दिवाकर (बिहार) और बालासाहब देवरस (कोलकाता) ने संघ कार्य का विस्तार करना शुरू किया। परिणामस्वरूप, लगभग एक दशक बाद देशभर में 600 से अधिक शाखाएँ और लगभग 70,000 स्वयंसेवक नियमित अभ्यास करने लगे।**

संघ का कार्य : व्यक्ति निर्माण

1935 में एक भाषण के दौरान डॉ. हेडगेवार कहते हैं, ''कोई स्वयंसेवक आज अच्छी तरह से काम कर रहा है और कल वह अपने घर बैठ जाए। यदि किसी दिन कोई स्वयंसेवक शाखा में उपस्थित न रहे, तो तुरंत उसके घर पहुँचकर यह जानकारी

लेनी चाहिए कि क्यों नहीं आया।"

राष्ट्रीय चारिङ्क्ष निर्माण और सामूहिक गुणों की उपासना (साधना), उन राष्ट्रीय गुणों का सामूहिक अभ्यास करने तथा अपने ध्येय का नित्य स्मरण करने के लिए संघ में शाखा नामक कार्यपद्धति विकसित हुई। प्रतिदिन एक घंटा चलने वाली शाखा में यह भाव जगाया जाता है कि भारत का सम्पूर्ण समाज एक है, समान है और सभी अपने हैं। साथ ही, उद्यम, साहस, धैर्य, शक्ति, बुद्धि और पराक्रम जैसे गुण विकसित करने हेतु खेल आदि विविध कार्यक्रम शाखा पर होते हैं। अनुशासन, एकता, वीरत्व और सामूहिकता का भाव निर्माण करने के लिए समता-अभ्यास (परेड), बैंड के ताल पर पथ संचलन और योग-व्यायाम (पीटी) जैसे कार्यक्रम शाखा में प्रारम्भ हुए और आज भी हो रहे हैं।

शाखा व्यक्ति-निर्माण की सतत साधना है। समाज को अपना मानकर उसके लिए कुछ न कुछ और कभी-कभी सब कुछ अर्पित करने का संस्कार यहीं से मिलता है। इस विचार को व्रत के रूप में स्वीकार कर जीवन भर उसका पालन करने का संकल्प लेकर जीने वाले हजारों स्वयंसेवक सक्रिय हैं। ऐसे सहयोगी कार्यकर्ताओं को देखकर प्रेरित हुए हजारों-लाखों स्वयंसेवकों के द्वारा आनंदपूर्वक यह समर्पण-यज्ञ अविरल चल रहा है।

संघ कार्य : राष्ट्र कार्य है

डॉ. हेडगेवार का उद्देश्य केवल संख्या बढ़ाने पर नहीं, बल्कि वास्तव में हिंदुओं को संगठित करना था। समाज में स्वाभाविक सामर्थ्य जगाना ही संघ का अंतिम लक्ष्य होगा।

संघ कार्य राष्ट्रकार्य है, मेरा कार्य है और यह समाज से धन लेकर नहीं, बल्कि स्वयंसेवकों की गुरुदक्षिणा स्वरूप प्राप्त समर्पण राशि से ही चलेगा-यह अनोखा विचार डॉ. हेडगेवार ने प्रस्तुत किया और लागू किया, जो आज भी चल रहा है। भारत में श्रेष्ठ आदर्श व्यक्ति को गुरु मानने की परम्परा प्राचीनकाल से रही है और आज भी प्रचलित है। परन्तु सम्पूर्ण समाज का संगठन होने के कारण संघ में कोई व्यक्ति गुरु नहीं है। हिन्दू समाज जितना प्राचीन है, उसका गुरु भी उतना ही प्राचीन होना चाहिए। इस विचार से संघ में हिन्दुत्व का प्रतिनिधि और सनातन प्रतीक भगवा ध्वजगुरु के रूप में स्थापित किया गया।

वर्तमान में सम्पूर्ण भारत के कुल 924 जिलों (संघ की योजना अनुसार) में से 98ण्3% जिलों में संघ की शाखाएँ चल रही हैं। कुल 6,618 खंडों में से 92ण्3% खंडों (तालुका), कुल 58,939 मंडलों (मंडल अर्थात 10ख्12 ग्रामों का एक समूह) में से 52ण्2% मंडलों में, 51,710 स्थानों पर 83,129 दैनिक शाखाओं तथा अन्य 26,460 स्थानों पर 32,147 साप्ताहिक मिलन केंद्रों के माध्यम से संघ कार्य का देशव्यापी विस्तार हुआ है, जो लगातार बढ़ रहा है।

श्रीगुरुजी के अनुसार संघ की आवश्यकता

संघ के 20 वर्ष पूरे होने पर श्रीगुरुजी ने कहा था, "20 वर्ष पूर्व जब संघ का जन्म हुआ, तब यह बात तो नहीं थी कि भारतवर्ष में कोई दूसरी संस्था ही नहीं थी। देश में कितनी संस्थाएँ थीं, जो अपने-अपने पथ पर चलकर, अपने-अपने तरीके से काम कर रही थीं, परंतु 'हिंदुस्थान हिंदुओं की स्वाभाविक जन्मभूमि, कर्मभूमि और पुण्यभूमि है', इसका ध्यान किसी को भी नहीं था। इस बात का विस्मरण ही हो गया था। अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, इतिहास आदि को भुलाकर लोग नए सिरे से काम करने निकले, मानो यहाँ पहले कभी कुछ था ही नहीं। विद्वान लोग कहते थेख् हमारा राष्ट्र अभी बनने जा रहा है। प्राचीनकाल से भारतवर्ष में एक सभ्य समाज है और यह स्वयं एक महान राष्ट्र है, इसका ज्ञान लुप्त-सा हो गया था। अपने अतीत को हम भूल गए थे, उससे हमें घृणा होने लगी थी। हमें 'हिंदू' नाम से भी घृणा हो गई थी। परंतु जो मनुष्य अपने अतीत से घृणा करता है, वह भविष्य कदापि नहीं बना सकता।"

श्रीगुरुजी का मानना है कि हिंदुओं की यह प्रवृत्ति एक अतीव भव्य संस्कृति का विनाश करने की प्रवृत्ति है। हमारी संस्कृति विशाल है, जो केवल मनुष्य को ही नहीं, अपितु अखिल चराचर सृष्टि को आत्मवत् मानती है। हमारी संस्कृति के स्थापक ऋषि-मुनियों ने दूसरों को अवश्य अपनाया है, पर अपने आत्मीयजनों को ठुकराकर नहीं। 'स्वयं जीवित रहो और दूसरों को भी रहने दो' की नीति पर भारतीय चलते हैं। श्रीगुरुजी के अनुसार संघ इसलिए पैदा हुआ कि हर एक हिंदू हिंदूपन, अपने हिंदू गौरव, हिंदू जीवन, हिंदू परंपरा, हिंदू इतिहास का अभिमान करे, अपने को हिंदू समझे।

वर्तमान में संघ का कार्य विस्तार

श्रीगुरुजी संघ के विस्तार पर कहते थे कि व्यक्ति के मन की विशालता बढ़ाने का संघ एक बड़ा भारी कारखाना है। यहाँ कोई हड़बड़ाहट नहीं, कोई कोलाहल नहीं। शांतचित्त से सच्ची जागृति यहाँ निर्माण हो रही है। सोच-समझकर क्रमबद्ध रूप से यहाँ काम होता है। अतः वर्तमान में सम्पूर्ण भारत के कुल 924 जिलों (संघ की योजना अनुसार) में से 98.3% जिलों में संघ की शाखाएँ चल रही हैं। कुल 6,618 खंडों में से 92.3% खंडों (तालुका), कुल 58,939 मंडलों (मंडल अर्थात 10-12 ग्रामों का एक समूह) में से 52.2% मंडलों में, 51,710 स्थानों पर 83,129 दैनिक शाखाओं तथा अन्य 26,460 स्थानों पर 32,147 साप्ताहिक मिलन केंद्रों के माध्यम से संघ कार्य का देशव्यापी विस्तार हुआ है, जो लगातार बढ़ रहा है।

इन 83,129 दैनिक शाखाओं में से 59 प्रतिशत शाखाएँ छात्रों की हैं तथा शेष 41 प्रतिशत व्यवसायी स्वयंसेवकों की शाखाओं में से 11 प्रतिशत शाखाएँ प्रौढ़ (40 वर्ष से ऊपर आयु) स्वयंसेवकों की हैं। बाकी सभी शाखाएँ युवा व्यवसायी स्वयंसेवकों की हैं।

संघ और विजयादशमी

श्रीगुरुजी के अनुसार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए विजयादशमी का महत्व अनन्य एवं असामान्य है, क्योंकि इसी दिन आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार जी ने संघ की स्थापना की।

श्रीगुरुजी 'विजयादशमी' के संदेश को संगठित शक्ति के महत्व के रूप में देखते हैं और कहते हैं कि रावण पर भगवान रामचंद्र जी ने विजय पाई थी। उसके उपलक्ष्य में विजयादशमी का महोत्सव मनाया जाता है। रावण एक महापराक्रमी, महाबलशाली राक्षस था। संसार को पीड़ा देने वाले नवग्रह, बड़े-बड़े राजा-महाराजा, वीर पुरुष और देवता भी रावण से डरते थे। सारी भौतिक संहारक शक्ति उसके पास थी, पर उसे हराया ऐसे वानरों ने, जिन्हें जंगली कहते हैं, जिनके पास सिवाय पेड़ और पत्थरों के कुछ भी अस्त्र-शस्त्र नहीं थे। उन्हें संगठित कर, उन्हीं के हाथों प्रभु रामचंद्र जी ने रावण को हराया। रावण की भौतिक शक्ति इस संगठित शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकी। नाश रावण का हुआ, भारतीय समाज, धर्म और सभ्यता का नहीं। श्रद्धा, आशा और उत्साह से भरा संगठित बल यदि देश में निर्माण कर सकें, तो सारे संकटों को हँसते-खेलते ठुकरा सकेंगे। यही विजयादशमी का संदेश है।

संघ के 20 वर्ष पूरे होने पर श्रीगुरुजी ने कहा था, ''20 वर्ष पूर्व जब संघ का जन्म हुआ, तब यह बात तो नहीं थी कि भारतवर्ष में कोई दूसरी संस्था ही नहीं थी। देश में कितनी संस्थाएँ थीं, जो अपने-अपने पथ पर चलकर, अपने-अपने तरीके से काम कर रही थीं, परंतु 'हिंदुस्थान हिंदुओं की स्वाभाविक जन्मभूमि, कर्मभूमि और पुण्यभूमि है', इसका ध्यान किसी को भी नहीं था। इस बात का विस्मरण ही हो गया था। अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, इतिहास आदि को भुलाकर लोग नए सिरे से काम करने निकले, मानो यहाँ पहले कभी कुछ था ही नहीं।''

एन.एच. पालकर कहते हैं कि संघ का प्रारंभ विजयादशमी के मुहूर्त पर हुआ था। प्रत्येक दशहरे को अपने जन्मदिन के अवसर पर उसने गत वर्ष की सीमा का उल्लंघन करके दिखाया है।

पालकर बताते हैं कि उस वर्ष डॉक्टर जी ने उस दिन नागपुर में सैनिक पद्धति से पथ संचलन का विचार किया तथा घोष विभाग को खड़ा करने की व्यवस्था की। लगभग पाँच-छह सौ स्वयंसेवक संचलन की दृष्टि से तैयारी कर रहे थे। इसी समय श्री विट्ठलभाई पटेल का नागपुर आगमन हुआ। डॉक्टर जी के निमंत्रण पर वे मोहिते संघस्थान पर भी आए। स्वयंसेवकों का अनुशासनबद्ध संचलन देखकर उन्हें अत्यंत आनंद हुआ। संचलन के उपरांत विट्ठलभाई को संघ का परिचय कराते हुए डॉ. मुंजे ने कहा, ''संघ का कार्य उस परिस्थिति का निर्माण करना है, जिसमें ये युवक 'हिंदुस्थान किसका है' पूछे जाने पर 'हम हिंदुओं का' इस प्रकार का निर्भीक उत्तर दे सकें।'' इसके बाद श्री विट्ठलभाई ने बहुत ही थोड़े एवं चुने हुए शब्दों में स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा, ''यह कार्य मेरे लिए नवीन है, पर इससे मेरे विचारों को चालना मिली है। राष्ट्रीय जीवन में इस कार्य के स्थान के विषय में मैं कोई मत देने में समर्थ नहीं हूँ; परंतु इतना कहूँगा कि जगत् में ईश्वर को छोड़कर किसी से डरो मत तथा अपने कार्य पर अविचल निष्ठा रखकर जोर से कार्य-वृद्धि करो।'' ❑

'व्यक्ति निर्माण की यज्ञ वेदी हैं शाखाएं'

गत 1 अक्तूबर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी पर एक भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले, केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत और दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता उपस्थित रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने संघ की 100 वर्ष की यात्रा को त्याग, नि:स्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण की अद्‌भुत मिसाल बताया। उन्होंने कहा कि शताब्दी समारोह का हिस्सा बनकर अत्यंत गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चल रहा है। संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का रास्ता चुना। इस रास्ते पर सतत चलने के लिए नित्य और नियमित चलने वाली शाखा के रूप में कार्य पद्धति को चुना। उन्होंने कहा कि डॉ. हेडगेवार जानते थे कि हमारा राष्ट्र तभी सशक्त होगा, जब हर व्यक्ति के भीतर राष्ट्र के प्रति दायित्व का बोध जागृत होगा। हमारा राष्ट्र तभी ऊंचा उठेगा, जब भारत का हर नागरिक राष्ट्र के लिए जीना सीखेगा। इसलिए वे व्यक्ति निर्माण में निरंतर जुड़े रहे। उनका तरीका अलग था। हमने बार-बार सुना है कि डॉ. हेडगेवार जी कहते थे कि जैसा है, वैसा लेना है। जैसा चाहिए, वैसा बनाना है।

1 अक्तूबर को नई दिल्ली में संघ की शताब्दी पर डाक टिकट जारी करते श्री नरेंद्र मोदी। साथ में हैं बाएं से श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, श्री दत्तात्रेय होसबाले और श्रीमती रेखा गुप्ता

उदाहरण देते हुए श्री मोदी ने कहा, "लोग संग्रह का उनका यह तरीका अगर समझना है तो हम कुम्हार को याद करते हैं। जैसे कुम्हार ईंट पकाता है तो जमीन की सामान्य-सी मिट्टी से शुरू करता है। वह मिट्टी लाता है और उस पर मेहनत करता है। उसे आकार देकर तपाता है। खुद भी तपता है और मिट्टी को भी तपाता है। फिर उन ईंटों को इकट्ठा करके भव्य इमारत बनाता है। ऐसे ही डॉ. हेडगेवार बहुत ही सामान्य लोगों को चुनते थे। फिर उन्हें सिखाते थे, विजन देते थे और उन्हें गढ़ते थे। इस तरह वे देश को समर्पित स्वयंसेवक तैयार करते थे।"

उन्होंने कहा कि संघ के बारे में कहा जाता है कि इसमें सामान्य लोग मिलकर असामान्य अभूतपूर्व कार्य करते हैं। व्यक्ति निर्माण की यह सुंदर प्रक्रिया आज भी हम संघ की शाखाओं में देखते हैं। उन्होंने कहा कि संघ शाखा का मैदान एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की 'अहम् और वहम' की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञ वेदी हैं। उन शाखाओं में व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है। स्वयंसेवकों के मन में राष्ट्र सेवा का भाव और साहस दिन प्रतिदिन पनपता रहता है। ❒

संघ पर डाक टिकट और सिक्का जारी

1963 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर संघ के स्वयंसेवकों ने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया था। नेहरू जी 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान स्वयंसेवकों के कार्यों से बहुत प्रसन्न हुए थे। इस कारण उन्होंने गणतंत्र दिवस की परेड में स्वयंसेवकों को बुलाया था। उस यादगार पल को अब भारत सरकार ने एक विशेष स्मारक डाक टिकट में उतारा है। टिकट पर परेड करते और सेवा कार्य करते स्वयंसेवकों को दर्शाया गया है। संघ के 100 वर्ष पर एक स्मारक सिक्का भी जारी किया गया है। इसमें 'भारत माता' के सामने पारंपरिक मुद्रा में खड़े स्वयंसेवक दिखाए गए हैं। यह स्मारक सिक्का शुद्ध चांदी का है और इसका मूल्यवर्ग 100 रुपए है।

देवरस जी के सपनों को साकार करती सेवा भारती

■ आचार्य मायाराम पतंग

वह मार्च का महीना था और वर्ष 1977 था। स्थान था दिल्ली। एक ओर गर्मी दस्तक दे रही थी, तो दूसरी ओर संघ के स्वयंसेवक एक सभा की तैयारी में लगे हुए थे। वह सभा होने वाली थी दिल्ली गेट के निकट फुटबॉल स्टेडियम में। उस सभा को सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस संबोधित करने वाले थे। इसलिए तैयारी भी दिन-रात चल रही थी। आखिर में वह दिन आ ही गया जिसका काफी दिनों से स्वयंसेवक इंतजार कर रहे थे। स्टेडियम सवयंसेवकों से खचाखच भर चुका था। इसी बीच बाला साहब जी वहाँ पधारे। एकाध वक्ता के बाद ही उन्होंने अपना उद्‌बोधन शुरू किया। पहले तो उन्होंने स्वयंसेवकों को आपातकाल में चलाए गए अनुपम सत्याग्रह आंदोलन के संचालन तथा सफलता के लिए बधाई दी। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महान उद्‌देश्य को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि संघ एक ऐसा समरस समाज विकसित करना चाहता है, जहाँ किसी के साथ जाति के आधार पर भेदभाव नहीं होगा। समरस एवं समृद्ध समाज भाषणों या नारों से नहीं बनाया जा सकता। ऐसे समाज के निर्माण के लिए एक कठिन तपस्या की आवश्यकता है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, ''जातिगत भेदभाव तथा अस्पृश्यता हमारे समाज के घातक रोग हैं। अब समय आ गया है कि स्वयं कृष्ण को सुदामा के घर जाना होगा। स्वयं जाकर समस्याओं तथा कमियों को समझना होगा, उनका निदान करना पड़ेगा। संघ के स्वयंसेवकों को समाज के वंचित, पीड़ित एवं पिछड़े वर्गों की सेवा के लिए उनकी बस्तियों में जाना होगा, उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाना होगा। राजनीतिक दल उनकी गरीबी, अशिक्षा एवं अज्ञानता को अपनी सत्ता के लिए भुनाते हैं। संघ को ऐसी राह अपनानी होगी कि वे अपनी गरीबी और अशिक्षा से स्वयं लड़ सकें। यह जागरूकता चाहने मात्र से नहीं आएगी। इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। उनके बीच में सेवा कार्य करने होंगे। उनकी याचना की प्रवृत्ति को दूर करना होगा। उनमें स्वावलंबन के लिए जागरूकता उत्पन्न करनी होगी।''

मार्च, 1977 में दिल्ली गेट के निकट फुटबॉल स्टेडियम में स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए श्री बालासाहब देवरस

उनके इस भाषण से जुड़ी बातों को कुछ देर के लिए यहीं विराम देते हैं और पहले देवरस जी के बारे में कुछ जान लेते हैं।

श्री मधुकर दत्तात्रेय देवरस, जो बालासाहब देवरस के नाम से प्रसिद्ध हैं, ने स्नातक करने के बाद नागपुर के एक अनाथालय में दो वर्ष तक का काम किया था। वहाँ उन्होंने स्वयं देखा था कि समाज में अनाथ, पीड़ित, वंचित तथा निर्धन लोगों की क्या समस्याएँ होती हैं। अतः उन्होंने उस दिन संघ के स्वयंसेवकों को भी समाज के उस वर्ग की ओर सहानुभूतिपूर्वक बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनके उद्‌बोधन का स्वयंसेवकों पर जबर्दस्त असर हुआ।

उन दिनों दिल्ली, हरियाणा प्रांत के प्रांत प्रचारक थे श्री अशोक सिंहल और दिल्ली के प्रचारक थे श्री विश्वनाथ। स्वयंसेवक सेवा क्षेत्र में कैसे जाएं, इस पर इन दोनों ने गहन विचार-वमर्श किया। इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए अशोक जी ने कानपुर में प्रचारक का दायित्व निभा रहे श्री विष्णु कुमार को दिल्ली बुलाया। आदेश मिलते ही विष्णु जी अपने काम में लग गए। वे झंडेवाला कार्यालय में कक्ष क्रमांक 13 में रहकर सेवा कार्यों का ताना-बाना बुनने लगे। पहले प्रत्येक जिले के प्रौढ़ प्रमुख की जगह सेवा प्रमुख तय किए गए। फिर सबके साथ विष्णु जी ने बैठक की। विष्णु जी के सहयोगी के रूप में श्री श्रवण कुमार को रखा गया। उन दिनों मुझे (इन पंक्तियों के लेखक) भी नवीन शाहदरा जिले का सेवा प्रमुख बनाया गया था। सभी प्रौढ़ शाखाओं को सेवाभावी स्वयंसेवक चयन करके सेवा प्रमुखों से संपर्क करने का निर्देश दिया गया। इसके बाद विष्णु जी ने सभी को अपनी पहुँच, अपने विचार तथा अपने साधनों से अपने क्षेत्र में सेवा कार्य स्वयं करने को कहा। सभी सेवा प्रमुखों ने अलग-अलग प्रकार के कार्य किए। किसी ने पिछड़ी बस्तियों में सफाई अभियान चलाया, तो किसी ने लंगर लगाया। किसी ने निर्धन छात्रों को पुस्तक,

ऐसे हुई सेवा भारती की स्थापना

दिल्ली में पहली बालवाड़ी वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री ब्रजमोहन के प्रयासों से जहांगीरपुरी में शुरू हुई। इसका उद्घाटन 2 अक्तूबर, 1979 को स्वयं बालासाहब देवरस जी ने किया था। काम बढ़ता जा रहा था। ऐसे में एक नियामक संस्था की जरूरत महसूस होने लगी थी, जो इन कार्यों के संचालन में सहयोग कर सकती थी। 14 अक्तूबर, 1979 को सभी कार्यकर्ताओं को झंडेवाला बुलाया गया। सबसे विचार करने के बाद उसी दिन सेवा भारती की स्थापना की गई। इसके बावजूद 2 अक्तूबर को ही सेवा भारती का स्थापना दिवस माना जाता है, क्योंकि उसी दिन सेवा भारती की आवश्यकता सबसे अधिक महसूस हुई थी।

कॉपियां देकर उनकी सेवा की। कई लोग अस्पतालों में फल, दवा आदि वितरित करने गए। इस बीच विष्णु जी सबसे संपर्क करते रहे और आवश्यक सहयोग तथा परामर्श भी देते रहे। मैंने अपने जिले के कुछ प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में संपर्क करके निर्धन विद्यार्थियों की सूची तैयार की और उनके बीच स्वेटर बाँटे।

इसी प्रकार के कार्यक्रम सभी जिलों में सेवा प्रमुखों ने किए। इसके बाद एक दिन विष्णु जी ने सेवा कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को बुलाया। सभी ने उन्हें अपने-अपने सेवा कार्यों की जानकारी दी। सबकी बातें सुनने के बाद विष्णु जी ने कहा कि आप लोगों ने अब तक क्षणिक और अस्थाई सेवा कार्य किया है। सेवित जन और सेवा करने वाले में कोई स्थाई संपर्क नहीं बना है। अत: ऐसे सेवा कार्य करें जिससे कि उनके साथ हमारा स्थायी संपर्क बना रहे। फिर विष्णु जी ने अपने द्वारा संपन्न सेवा कार्य का विवरण दिया। वे तिमारपुर के पास एक पिछड़ी बस्ती में आठवीं और नौवीं कक्षा के छात्रों को अंग्रेजी, गणित और विज्ञान पढ़ा रहे थे। जिन बच्चों को उन्होंने पढ़ाया वार्षिक परीक्षा में उनके परिणाम बहुत ही अच्छे थे। उन बच्चों में इतना सुधार देखकर उनके विद्यालयीन शिक्षकों ने विष्णु जी से भेंट की थी।

विष्णु जी के इस कार्य से सभी बड़े प्रभावित हुए। इसके बाद सभी सेवा प्रमुखों ने अपने-अपने क्षेत्रों में मंदिर आदि स्थान खोजकर ऐसे ही कोचिंग केंद्र खोलने आरंभ किए।

एक बस्ती के अभिभावक ने विष्णु जी से एक बार कहा कि जो बच्चे बड़े हो गए, उन्हें आपने पढ़ाना शुरू कर दिया है, पर ऐसे भी बहुत सारे बच्चे हैं, जिनके माता-पिता छोटे-मोटे काम पर चले जाते हैं और उनके पीछे उनके बच्चों को देखने वाला कोई नहीं होता है। आप उन बच्चों के लिए भी कुछ करें। तब बालवाड़ी शुरू करने का निर्णय लिया गया।

पहली बालवाड़ी वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री ब्रजमोहन के प्रयासों से जहांगीरपुरी में शुरू हुई। इसका उद्घाटन 2 अक्तूबर, 1979 को स्वयं बालासाहब देवरस जी ने किया था। बालासाहब जी ने सेवा की जो कल्पना की थी, वह साकार होने लगा था। उस दिन इसके साक्षी जहांगीरपुरी के लोग और स्वयंसेवक बने।

काम बढ़ता जा रहा था। एक ऐसी नियामक संस्था की जरूरत महसूस होने लगी थी, जो इन कार्यों के संचालन में सहयोग कर सकती थी। 14 अक्तूबर, 1979 को सभी कार्यकर्ताओं को झंडेवाला बुलाया गया। सबसे विचार करने के बाद उसी दिन सेवा भारती की स्थापना की गई। इसके बावजूद 2 अक्तूबर को ही सेवा भारती का स्थापना दिवस माना जाता है, क्योंकि उसी दिन सेवा भारती की आवश्यकता सबसे अधिक महसूस हुई थी।

यद्यपि सारी दिल्ली के सभी विभागों में सेवा कार्य इससे पूर्व शुरू हो चुके थे। ये सेवा कार्य तब संघ के सेवा कार्य कहे जाते थे। इस बीच में श्री अश्विनी कुमार खन्ना ने 'सेवा भारती' नाम तय करवाया तथा एक संविधान बना कर पंजीकृत संस्था का रूप दिया। विष्णु कुमार जी को संगठन मंत्री तथा पं. विश्वामित्र पुष्करणा को सह संगठन मंत्री का दायित्व दिया गया। श्री कर्मचंद मेहरा अध्यक्ष तथा श्री सरदारी लाल गुप्ता मंत्री बने। श्री रमावतार गुप्ता को प्रचार मंत्री बनाया गया, जो 'सेवा समर्पण' मासिक के प्रथम संपादक बने। सेवा भारती की धुरी के रूप में विष्णु जी ने जीवन लगा दिया। वे कभी मंच पर नहीं जाते थे। न भाषण, न माला, न सम्मान, केवल काम, काम, काम। श्री अशोक सिंहल जब तक जीवित रहे तब तक उनका अशीर्वाद मिला। वरिष्ठ प्रचारक श्री प्रेमचंद गोयल का प्रेरणादायी आशीर्वाद आज भी मिल रहा है।

आज अनेक प्रांतों में सेवा भारती काम कर रही है। हालांकि सभी प्रांतों में स्वतंत्र इकाइयाँ हैं। ये सभी अपने-अपने स्तर पर सेवा कार्यों के जरिए बालासाहब के सपनों को साकार कर रही हैं। ❐

अंधकार को दूर करने का त्योहार है दीपावली

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

दीपावली का त्योहार भारतीय संस्कृति का, भारतीय धरोहर का, भारतीय ऋषि-मुनियों का और भारतीय परंपरा का सबसे बड़ा पर्व है। दीपावली शब्द का अर्थ है 'दीपों की अवली' यानी 'दीपों की पंक्ति' इसलिए इस त्योहार में दीप प्रज्वलित करके पूरे घर में प्रकाश किया जाता है। अंधकार को दूर करने का त्योहार दीपावली है। भारतीय शास्त्रों के अनुसार यह प्रकाश ही व्यक्ति के विवेक और ज्ञान का प्रतीक है। जब व्यक्ति के अंदर का प्रकाश बाहर आ जाता है यानी विवेक जाग जाता है तो वह सद्मार्ग पर चलता है और अपना कल्याण कर लेता है। बस यही भाव इस दीपावली त्योहार में छुपा हुआ है।

वास्तव में देखा जाए तो दीपावली में हर चीज का संबंध घर की शांति से है, मन की खुशी से है और घर में सुख-सौभाग्य की वृद्धि से है। दीपावली के त्योहार से पहले ही लोग अपने घरों की साफ-सफाई कर लेते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि इस त्योहार का संबंध स्वच्छता से भी है और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता से भी।

दीपावली का उत्सव "पाँच पर्वों का उत्सव" कहलाता है। पहला त्योहार- धनतेरस, दूसरा त्योहार- नरक चतुर्दशी या रूप चतुर्दशी अथवा छोटी दिवाली, तीसरा और प्रमुख त्योहार- दीपावली, चौथा त्योहार- गोवर्धन पूजा और पाँचवें दिन का त्योहार- भाई दूज के रूप में मनाया जाता है। ये सभी पाँचों त्योहार भारतीय संस्कृति के किसी न किसी रूप में संदेश देने आते हैं-

1. **नरक चतुर्दशी**- इस दिन मानव जीवन की आरोग्यता के लिए भगवान धन्वंतरी जी को स्मरण किया जाता है। किसी भी व्यक्ति का जब शरीर स्वस्थ रहता है तो वह बहुत बड़ा धनवान माना जाता है। इसलिए इस दिन को भारतीय परिवेश में बहुत स्मरण किया जाता है।
2. **धनतेरस**- यह दिन छोटी दिवाली के रूप में मनाया जाता है। इस दिन घर की साफ-सफाई की जाती है और घर को सजाया जाता है। दीपावली के मुख्य त्योहार के लिए यह दिन भूमिका स्वरूप तैयारी का कार्य करता है।
3. **दीपावली**- इस त्योहार को दीपोत्सव भी कहते हैं। इस दिन भारतीय परिवारों में खुशी का माहौल होता है। सुबह से ही सभी लोग नहा-धोकर घर के कार्यों में लग जाते हैं। रात्रि के समय विघ्नेश्वर श्रीगणेश और जगदंबा लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। पूजा में मिठाई के अलावा खील-बतासे चढ़ाने का बहुत महत्व माना जाता है। परिवार के लोग एक जगह बैठकर पूजा करते हैं और आरती के बाद सभी को मिठाई खिलाई जाती है। विशेष कर बच्चों के लिए यह त्योहार बहुत ही आनंददायक बन जाता है। कुछ श्रद्धालु लोग पूरी रात जागरण करके श्रीसूक्त का अथवा गोपालसहस्रनाम का पाठ करते हैं।
4. **गोवर्धन पूजा**- इस त्योहार को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक कथाओं में ऐसा आता है कि

जब ब्रज वासियों से इंद्र कुपित हो गए थे तो उन्होंने वहाँ पर तेज बरसात चालू कर दी थी, जिससे बचाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने सात दिनों तक गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उँगली पर धारण किया था। इस बात का आभार व्यक्त करते हुए लोग आज भी भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करते हैं। इस दिन अधिकतर लोग अपने घरों में गोबर से भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप धरती पर बनाते हैं और उन्हें कढ़ी, चावल और अन्नकूट का भोग लगाया जाता है।

5. **भाई दूज-** भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के लिए अनेक त्योहार आते हैं, उनमें रक्षाबंधन प्रमुख है। इसी श्रृंखला में भाई दूज का त्योहार भी आता है, जिसमें बहन अपने भाई की कुशलता के लिए माथे पर तिलक करती है और मिठाई खिलाती है। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के लिए यमुना और यम की कथा पुराणों में लिखी हुई है। इसलिए कुछ भाई-बहन मिलकर यमुना नदी में स्नान करने के लिए भी जाते हैं।

दीपावली मनाने के लिए उपर्युक्त कारण आध्यात्मिक हो सकते हैं लेकिन उनके साथ में यह त्योहार न केवल घर में बाहरी प्रकाश करता है, बल्कि हृदय में भी प्रकाश करता है। इस उत्सव के द्वारा समाज के बहुत लोगों को आजीविका का सहारा भी मिल जाता है। दीपक बेचने वालों को, फूल माला बेचने वालों को, मिठाई बेचने वालों को, मोमबत्ती बेचने वालों को और सजावट का सामान बेचने वालों को यह त्योहार खुशियों भरा बन जाता है। इसलिए ऐसा माना जाता है कि भारत में जितने भी त्योहार हैं उन सभी में यह त्योहार सार्वभौमिक रूप से समाज के सभी वर्गों के लिए बहुत ही प्रेरणादाई एवं धनोपार्जन कराने के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है। इस दिन लोग अपने मित्रों, शुभचिंतकों, परिचितों के घर मिठाई देने के लिए भी जाते हैं। ❐

अहिंसा के पुजारी गांधीजी

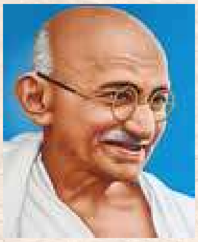

महात्मा गांधी को हम राष्ट्रपिता के नाम से जानते हैं। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। वे सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के पुजारी थे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक बने। गांधीजी ने कानून की पढ़ाई इंग्लैंड में की और वकालत के लिए दक्षिण अफ्रीका गए। वहां उन्होंने नस्लभेद के खिलाफ लड़ाई लड़ी और सत्याग्रह का प्रयोग किया। भारत आकर उन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे कई आंदोलन चलाए। उनका मुख्य हथियार सत्य और अहिंसा था। वे मानते थे कि बिना हिंसा किए भी अन्याय के खिलाफ लड़ा जा सकता है। उन्होंने छुआछूत, अस्पृश्यता और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गई। महात्मा गांधी ने भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि सत्य और अहिंसा से भी बड़े से बड़ा परिवर्तन संभव है। ❐

सादगी, ईमानदारी और देशभक्ति के प्रतीक

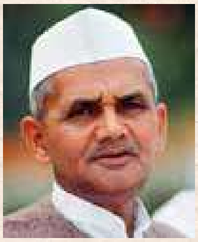

लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय (अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर) में हुआ था। वे अपनी सादगी, ईमानदारी और दृढ़ निश्चय के लिए जाने जाते हैं। वाराणसी के काशी विद्यापीठ से "शास्त्री" की उपाधि प्राप्त की, जिससे उनके नाम के साथ "शास्त्री" जुड़ गया। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और "भारत छोड़ो आंदोलन" में सक्रिय रूप से भाग लिया। आज़ादी के बाद वे उत्तर प्रदेश के गृह मंत्री रहे। बाद में केंद्र सरकार में रेल मंत्री और अन्य मंत्रालयों का दायित्व संभाला। 1964 में जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद वे भारत के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने "जय जवान, जय किसान" का नारा दिया, जिसने देश की एकता और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत किया। पाकिस्तान के साथ 1965 के युद्ध में उन्होंने मजबूत नेतृत्व दिया। 11 जनवरी, 1966 को ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) में समझौता वार्ता के बाद रहस्यमयी परिस्थितियों में उनका निधन हो गया। वे सादगी, ईमानदारी और देशभक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। ❐

मोल प्रदीप्त दीपक का है, बुझे दीयों का नहीं

■ **डॉ. प्रणव पंड्या,** प्रमुख, अखिल विश्व गायत्री परिवार

भारत में दीपावली पर्व का बहुत बड़ा महत्व है। दीपावली उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक पूरे देश में मनाई जाती है। श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल आदि देशों में भी यह पर्व मनाया जाता है।

पाँच दिन तक चलने वाले इस महापर्व में कितने ही संदर्भ जुड़े हुए हैं। वे भारत में उद्‌भूत हुए सभी धर्मों और संप्रदायों के विश्वास से जुड़े हुए हैं। वैदिक मत के अनुयायियों के अलावा जैन, सिख, बौद्ध और वेदों में असद् भक्ति रखने वाले सभी संप्रदायों के शलाका पुरुष कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से शुरू होने वाले महापर्व में किसी-न-किसी दिन याद किए जाते हैं। दीपावली पहचान से संबद्ध है। धार्मिक या पारंपरिक कारणों से यदि संकोच हो तो भी कोई हर्ज नहीं है। दीपावली को लोक-समाज ने तो राष्ट्रीय पर्व मान ही लिया है। धनतेरस या धन्वंतरि जयंती, नरक चतुर्दशी, काली पूजा, लक्ष्मी पूजा, हनुमान जयंती, महावीर निर्वाण, बलि प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा, नवसंवत्सर, भाई दूज और यम द्वितीया जैसे एकादश संदर्भों वाले इस अवसर को लोकपर्व की प्रतिष्ठा तो सदियों से मिली हुई है।

दीपावली का सामान्य परिचय लक्ष्मी पूजा के उत्सव के रूप में है। समुद्र मंथन के समय इस दिन लक्ष्मी के प्रकट होने की अंतर्कथा वाला यह प्रसंग दीपावली का प्रमुख संदर्भ है। पौराणिक महत्व के साथ व्यावहारिक सच्चाई भी है कि लक्ष्मी की प्रसन्नता सभी के लिए अभीष्ट है। साल भर में पाँच मिनट भी पूजापाठ और प्रदीप ध्यान में नहीं लगाने वाले व्यक्ति भी इस दिन सिक्कों की खनखनाहट को मंदिर की घंटियों की तरह सुनते और लक्ष्मी पूजा में मन लगाते हैं। धन-वैभव हर किसी को चाहिए। इसलिए उसकी अधिष्ठात्री शक्ति की पूजा-आराधना भी व्यापक रूप से प्रचलित होगी ही।

लेकिन दीपावली के दूसरे संदर्भ भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उन संदर्भों की दिशा और संकेतों को समझने की चेष्टा करें तो जीवन का संपूर्ण शास्त्र अपने रहस्य खोल देता है। इस पुनरावृत्ति में जाना जरूरी नहीं है कि खेती-बाड़ी से निपटकर आनंद-उल्लास मनाने की दृष्टि से यह पर्व रचा गया। यह भी कि पर्व पहले से प्रचलित था और धीरे-धीरे तमाम संदर्भ जुड़ते गए। संस्कृत वाङ्मय में यह पर्व शारदीय उत्सव के रूप में

भी चित्रित किया गया है। उन उल्लेखों के अनुसार दशहरे के बाद से शुरू होकर पर्व पूरे सत्रह दिन तक मनाया जाता था। शरद पूर्णिमा इस उत्सव का पड़ाव था।

त्रयोदशी का पहला दिन धन्वंतरि जयंती के रूप में मनाया जाता है। लोग इसे धनतेरस भी कहते हैं और पहले दिन का संबंध धन-वैभव से जोड़ते हैं। धन्वंतरि जयंती का संबोधन घिस-पिटकर धनतेरस के रूप में प्रचलित हो गया। वस्तुतः यह आरोग्य के देवता धन्वंतरि का अवतरण दिवस है। मान्यता है कि समुद्र मंथन के समय इसी दिन धन्वंतरि आयुर्वेद और अमृत लेकर प्रकट हुए थे। समुद्र-मंथन का प्रयोजन पूरा हुआ मानकर देव और असुर दोनों तेजी से लपके थे। इन दिनों धन्वंतरि जयंती चिकित्सा व्यवसाय में जुड़े लोगों तक ही सीमित रह गई है। प्रचलित क्रम के अनुसार यम के निमित्त एक दीया जलाकर धनतेरस मनाई जाती है। दीया घर के मुख्य द्वार पर रखा जाता है। कामना की जाती है कि वह दीप अकाल मृत्यु के प्रवेश को रोके। ऐसा विवेक जगाए जो स्वास्थ्य, शक्ति और शांति दे। यम की बहन यमुना नदी जिन क्षेत्रों में बहती है वहाँ यह विशेष पूजा का दिन भी है। उस दिन श्रद्धालु यमुना में स्नान कर यम को मनाने की भावना करते हैं।

दीपावली महापर्व का पहला दीप जलाकर शुरू हुए महोत्सव का एक अंग नए बर्तन खरीदना भी है। लक्ष्मी के लिए भोग-प्रसाद घर में ही बनाना चाहिए। खाने-बांटने के लिए बाजार से कितने ही व्यंजन मँगाए जाएँ। पूजन सामग्री घर में ही तैयार हो, देवता को कोरा, ताजा अच्छा और पवित्र भोजन अर्पित करना चाहिए। नए बर्तन भी इसलिए खरीदे जाते हैं कि प्रसाद तैयार करने के लिए प्रयुक्त पात्रों का उपयोग भी भोग पूजा तैयार करने के साथ शुरू हो। नरक चतुर्दशी और हनुमान जयंती महापर्व का दूसरा दिन है। 'नरक' विशेषण से स्पष्ट है कि इसका संबंध भी मृत्यु अथवा यमराज से है। विधायक अर्थ में यह दिन स्वास्थ्य साधना का दिन है। पर्व का विधान है कि इस दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि करना चाहिए। चतुर्दशी के दिन जो लोग सूर्योदय के बाद स्नान करते हैं, उनके लिए कठोर शब्द कहे गए हैं। सायंकाल दीपदान के लिए है और दीप यम के लिए जलाए जाते हैं। सुबह स्नान और शाम को दीपदान से चूकने को धर्म शास्त्रों में अक्षम्य पाप बताया है। कहा है कि उन लोगों को वर्षभर किए गए पुण्य कर्मों का फल नहीं मिलेगा।

आशय यह है कि आलस्य और प्रमाद में सुबह-शाम गँवा देने वाले लोग जीवनरस को छककर नहीं पी सकते। आधे-अधूरे मन से किए गए उनके काम विपरीत परिणाम ही देते हैं। यम यदि मृत्यु के देवता हैं, उनका काम संसार का नियमन करना है, तो संयम के अधिष्ठाता देव भी हैं। उन देव हनुमान की जयंती नरक चतुर्दशी के दिन मनाई जाती है। हनुमान जयंती यों चैत्र मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है, लेकिन उत्तर भारत के कई भागों में यह दीपावली से एक दिन पहले मनती है। आशय यह है कि संयम-नियम से रहने वालों को मृत्यु से जरा भी भयभीत नहीं होना चाहिए। उनकी अपनी साधना उनकी रक्षा करेगी। पर्व का नाम नरक चतुर्दशी प्रचलित है। इसका यह नाम कृष्ण लीला से संबंधित भी है।

पौराणिक कथा है कि इसी दिन भगवान् कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। उस राक्षस ने हजारों कुलीन स्त्रियों को बंदी बना लिया था। उनसे दासी की तरह व्यवहार करता था। नरकासुर के आतंक से पृथ्वी के समस्त शूर और सम्राट थरथर काँपते थे। प्रतीक की दृष्टि से नरकासुर उद्दाम अहं और वासना का उदाहरण है। ये प्रवृत्तियाँ कितना ही आतंक मचा लें, अंततः पराभूत ही होती हैं। जब इनका दारुण अंत होता तो कोई आँसू नहीं बहाता था, प्रत्युत लोग खुश होते थे। अमावस्या दीपावली का प्रमुख उत्सव है। बीते दो दिन भूमिका और विस्तार के थे। लक्ष्मी पूजा का प्रसंग मुख्य है और वह पर्व के ठीक मध्य में आता है। जाति, वर्ग, स्थिति पद, प्रतिष्ठा और ऊँच-नीच के सभी भेद बाधित हो जाते हैं और उत्साह भरे धीरज के साथ पर्व मनाते हैं। उत्साह लक्ष्मी के आवाहन के लिए और धीरज पुकार सुन लेन लेने की प्रतीक्षा के लिए।

दूसरे पर्व उत्सवों की तरह इस दिन आमोद-प्रमोद के साधन इकट्ठे नहीं होते, लेकिन यह कर्मठता और जागरूकता का संदेश जरूर दे जाता है। रात भर जागकर प्रतीक्षा करने का अर्थ ही यह है कि जागरूक रहते हुए पुरुषार्थ किया जाए। उद्यमी प्रयत्नशील और पुरुषार्थी व्यक्ति पर ही लक्ष्मी का अनुग्रह बरसता है। गोवर्धन पूजा वायवीय, आकाशीय शक्तियों का मुँह ताकने के स्थान पर प्रकृति की आराधना का प्रतीक है। स्वास्थ्य, धन और प्रवृत्ति को जिसने साध लिया, उसके लिए सभी दिशाओं में जय-ही-जय है। मृत्यु और यम उसके लिए भाई-बहन की तरह हो जाते हैं, जो सभी स्थितियों में रक्षा करते हैं, संरक्षण देते हैं।

दीपावली का समापन मर्यादा और पारिवारिक दायित्वों के स्मरण के साथ होता है। उन सभी का स्मरण रखना चाहिए,

जो सहोदर हैं, लौकिक दृष्टि से भाई-बहन हैं। उसमें प्रकृति परिवार के अन्य सदस्य भी आ जाते हैं। कम-से-कम वे सदस्य तो निश्चित ही, जो किसी भी रूप में, किसी भी कोण से सहोदर हैं जो अपने आसपास ही जन्मे और पले-बढ़े हैं। इस प्रकार यह पर्व समुच्चय महती शिक्षण हमें दे जाता है।

महानायक भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र को अपनाने का यह विशिष्ट पर्व भारतीय संस्कृति के समग्र उत्थान के लिए प्रेरणा परक पर्व है। इस पर्व के मर्म को समझना आवश्यक है। दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना भी आवश्यक है, अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुए मिट्टी के दीपक हाथों में रह जाएँगे, आकाशीय अमृत-आलोक खो जायेगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखेरता है और तत्पश्चात् अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुए प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना।

यह घटना असाधारण है और तिल-तिल जलने-गलने का वह संकल्प जो उसकी मरणशीलता में अमृत घोलता है। इस मिट्टी की ज्योति तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन उर्ध्वगामी ज्योति तो निरन्तर आकाश की ओर भागी जा रही है। दीपक की ही भाँति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किन्तु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है। जिन्दगी के सघन अंधकार में जीवन की समस्त दुर्बलताएँ सजग-सक्रिय हो जाती हैं, दुष्प्रवृत्तियाँ नंगा नाच करने लगती हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह के संजाल नानाविधि रूपों में अपना अदृश्य परिचय देते हैं। पौराणिक काल की असुरता आज के अंध तमस में जीवित है, बदला है तो केवल उसका स्वरूप। रावण, कंस, जरासंध, दुर्योधन की भूमिका में आज महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी क्रियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंक कमतर नजर आते हैं, क्योंकि मानवीय बुद्धि के विकास के चरम दुरुपयोग जो इनके साथ हैं।

परम चेतना रूप में परमात्मा की करुणा ही स्नेह बनकर बाती को सिक्त किए रहती है। चैतन्य ही प्रकाश है, जो समूचे अस्तित्व को प्रभु की करुणा के सहारे सार्थक बनाता है। प्रकाश की यह महाचैतन्यता ही हमारे समग्र अस्तित्व को प्रभु की करुणा धारा एवं निर्झर से आप्लावित एवं आलोकित करती है। प्रभु करुणा का आलोक अनुशासन रूपी आँवाँ में तपने पर ही मिलता है। तब जाकर कहीं वह सद्‌गुरु की कृपा से परमात्मा की स्नेहरूपी करुणा का पात्र बनकर दीपक का रूप लेता है। ऐसा दीपक जिसमें आत्मज्योति प्रकाशित होती है। दीपावली पर जलने वाले दीपकों की संख्या एक दो नहीं, हजारों होती हैं, परन्तु इससे बाहर का अंधकार मिटता है, अंतर का अंधकार तो यथावत् बना रहता है। अच्छा हो कि दीपावली में दीपक के सच की इस अनुभूति के साथ हम एक दीपक जलाएं, ताकि इस मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति मुस्करा सके। ❒

कमी निकालना आसान, उसे ठीक करना मुश्किल

एक शहर में एक चित्रकार रहता था। वह बड़ा अच्छे चित्र बनाता था। एक बार उसके मन में आया कि अपने चित्रों की कुछ पहचान करवाना है। उन्होंने एक बड़ा सा सुंदर चित्र बनाया और शहर के चौराहे पर टांग दिया और उस पर लिख दिया इसमें जहां कमी है उस पर निशान लगा दें। शाम तक देखा वह चित्र बिल्कुल गंदा हो चुका था। सब जगह निशान लग चुके थे। वह चित्रकार उदास हो गया और बैठा हुआ सोच रहा था कि क्या मुझे चित्र बनाना नहीं आता। इतने

में उसका एक मित्र आया। उसने उसे उदासी का कारण पूछा तो उसने बताया कि भाई मैंने चित्र बनाया था और लोगों ने इसको पसंद नहीं किया। मित्र बोला घबराओ नहीं दोस्त, अब एक चित्र और बना और उसको चौराहे पर लगा दो। उस पर लिख दो जो इसमें कमी हो तो उसे ठीक कर दें। उसने वैसा ही किया। शाम हो गई, लेकिन चित्र वैसा का ही वैसा था। यानी कमी निकालना आसान है, ठीक करना बहुत मुश्किल होता है।

द्वारा-राजेन्द्र मित्तल

सामूहिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता का दर्शन

■ श्वेत कमल

कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को पूर्वी भारत में मनाया जाने वाला एक पावन पर्व है छठ पूजा। यह अलौकिक, अनुपम, अद्‌भुत, सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन पथ की निरंतरता का प्रतीक है।

प्रकृति की ऊर्जा, ऊष्मा और परमात्मा की परम शक्ति का प्रत्यक्ष घोतक सूर्यदेव की उपासना का यह अनुपम लोकपर्व मुख्य रूप से बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है।

छठ महापर्व और बिहार

लोक कथाओं के अनुसार अंग प्रदेश, जिसका वर्तमान नाम भागलपुर है, के राजा अंग नरेश अर्थात राजा कर्ण ने सूर्य देव का पुत्र होने के कारण सूर्य देव की उपासना की परंपरा शुरू की। राजा कर्ण के द्वारा प्रारंभ हुआ यह महापर्व अंग प्रदेश या भागलपुर से पूरे बिहार और पूर्वांचल और अब भारत से होता हुआ पूरी दुनिया में अपनी अपार सांस्कृतिक समृद्धि के साथ जा पहुंचा है। सदियों से चली आ रही लोक कथाओं के अनुसार यह पर्व मैथिल, मगही और भोजपुरी लोगों का सबसे बड़ा पर्व है। यह उनकी सांस्कृतिक घरोहर है। छठ महापर्व बिहार में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। यह पर्व बिहार या पूरे भारत का ऐसा एक मात्र पर्व है जो वैदिक काल से चला आ रहा है और अब तो यह बिहार की संस्कृति की पहचान का पर्याय बन चुका है। पूर्वांचल के सभी क्षेत्रों में इस पावन पर्व को लोक भाषा में 'बड़का पर्व' कहा जाता है।

यह पर्व बिहार की वैदिक आर्य संस्कृति की एक छोटी सी झलक दिखाता है, जो भारत की आंचलिक समग्रता का जीता जागता उदाहरण है। यह पर्व ऋग्वेद में वर्णित सूर्य पूजन एवं उषा पूजन तथा आर्य परंपरा के अनुसार मनाया जाता है।

छठ पूजा सूर्य, प्रकृति, जल, वायु और उनकी बहन छठी मइया को समर्पित है। पृथ्वी पर जीवन प्रदान करने और समस्त जन को पालित-पोषित करने तथा जीवन में समस्त मांगलिक कामनाओं की पूर्ति के लिए छठी मैया को, जिन्हें माता पार्वती के छठे रूप एवं भगवान सूर्य की बहन छठी मैया के रूप में पूजा जाता है। यह चंद्र के छठे दिन अर्थात काली पूजा के छह दिन बाद मनाया जाता है। छठ महापर्व के दौरान व्रती महिलाएं शुद्ध पारंपरिक संस्कृति परम्परा की प्रतीक बिना सिलाई के शुद्ध सूती धोती पहनती हैं। छठ महापर्व के व्रत के अनुष्ठान अत्यंत कठोर हैं, परंतु सभी व्रतियों द्वारा इसे अपार श्रद्धा के साथ चार दिन की अवधि में बड़ी तन्मयता और श्रद्धा पूर्वक वहन किया जाता है। इनमें पवित्र स्नान, निर्जला उपवास, लंबे समय तक पानी में खड़ा होना, और प्रसाद (प्रार्थना प्रसाद) और अर्घ्य देना शामिल है। परवैतिन नामक मुख्य उपासक जो आमतौर पर महिलाएं होती हैं। हालांकि, बड़ी संख्या में पुरुष इस महापर्व का व्रत-उपवास करते हैं क्योंकि छठ प्रत्येक जनमानस की आस्था जुड़ा त्योहार है।

पर्यावरण के प्रति अटूट श्रद्धा

पर्यावरणविदों का दावा है कि छठ महापर्व सबसे पर्यावरण-अनुकूल हिंदू त्योहार है। भारत में छठ महापर्व

सूर्य की उपासना के लिए प्रसिद्ध है। मूलत: सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र मास में और दूसरी बार कार्तिक मास में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। पारिवारिक सुख-समृद्धि तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रूप से इस पर्व को मनाते हैं। छठ व्रत के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। उनमें से एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। जिसके फलस्वरूप उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुई तथा पांडवों को उनका राजपाट वापस मिला।

लोक परम्परा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मइया का सम्बन्ध भाई-बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्यदेव ने ही की थी।

ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह घटना कार्तिक तथा चैत्र मास की अमावस्या के छह दिन उपरान्त आती है। ज्योतिषीय गणना पर आधारित होने के कारण इसका नाम और कुछ नहीं, बल्कि छठ महापर्व ही रखा गया है।

एकजुटता का सामूहिक भाव

लोकपर्व छठ के विभिन्न अवसरों पर जैसे प्रसाद बनाते समय, खरना के समय, अर्घ्य देने के लिए जाते हुए, अर्घ्य दान के समय और घाट से घर लौटते समय अनेक सुमधुर और भक्ति-भाव से पूर्ण लोकगीत गाये जाते हैं।

'केलवा जे फरेला घवद से, ओह पर सुगा मेड़राय।'
'काँच ही बाँस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए।'
'सेविले चरन तोहार हे छठी मइया। महिमा तोहर अपार।'
'उगु न सुरुज देव भइलो अरग के बेर।'
'निंदिया के मातल सुरुज अँखियो न खोले हे।'
'चार कोना के पोखरवा।'
'हम करेली छठ बरतिया से उनखे लागी।'

आंचलिक पहचान का आध्यात्मिक दर्शन

छठ पूजा को देश के कई हिस्सों में बिहार और उत्तर प्रदेश से आये उत्तर भारतीय आर्य लोगों की पहचान के रूप में देखा जाता रहा है। वास्तव में तो छठ महापर्व का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष सादगी,पवित्रता और इसका लोकपक्ष है। भक्ति और आध्यात्म से परिपूर्ण इस पर्व में बाँस निर्मित सूप, टोकरी, मिट्टी के बर्तनों, गन्ने का रस, गुड़, चावल और गेहूँ से निर्मित प्रसाद और सुमधुर लोकगीतों से युक्त होकर लोक जीवन की भरपूर मिठास का प्रसार करता है।

इस उत्सव के लिए जनता स्वयं अपने सामूहिक अभियान संगठित करती है। नगरों की सफाई, व्रतियों के गुजरने वाले रास्तों का प्रबन्धन, तालाब या नदी किनारे अर्घ्य दान की उपयुक्त व्यवस्था के लिए समाज सरकार की सहायता की राह नहीं देखता। इस उत्सव में खरना के उत्सव से लेकर अर्घ्यदान तक समाज की अनिवार्य उपस्थिति बनी रहती है। यह सामान्य और गरीब जनता के अपने दैनिक जीवन की मुश्किलों को भुलाकर सेवा-भाव और भक्ति-भाव से किये गये सामूहिक कर्म का विराट और भव्य प्रदर्शन है।

सामूहिक कर्म का विराट और भव्य प्रदर्शन

शास्त्रों से अलग यह जन सामान्य द्वारा अपने रीति-रिवाजों के रंगों में गढ़ी गयी उपासना पद्धति है। इसके केंद्र में वेद, पुराण जैसे धर्मग्रन्थ न होकर किसान और ग्रामीण जीवन है। इस व्रत के लिए न विशेष धन की आवश्यकता है न पुरोहित या गुरु की अभ्यर्थना की। जरूरत पड़ती है तो पास-पड़ोस के सहयोग की जो अपनी सेवा के लिए सहर्ष और कृतज्ञतापूर्वक प्रस्तुत रहता है। इस उत्सव के लिए जनता स्वयं अपने सामूहिक अभियान संगठित करती है। नगरों की सफाई, व्रतियों के गुजरने वाले रास्तों का प्रबन्धन, तालाब या नदी किनारे अर्घ्य दान की उपयुक्त व्यवस्था के लिए समाज सरकार की सहायता की राह नहीं देखता। इस उत्सव में खरना के उत्सव से लेकर अर्घ्यदान तक समाज की अनिवार्य उपस्थिति बनी रहती है। यह सामान्य और गरीब जनता के अपने दैनिक जीवन की मुश्किलों को भुलाकर सेवा-भाव और भक्ति-भाव से किये गये सामूहिक कर्म का विराट और भव्य प्रदर्शन है। ❒

करवा चौथ व्रत

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

करवा चौथ कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह पर्व सौभाग्यवती (सुहागिनद्ध स्त्रियाँ मनाती हैं। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में शुरू होकर रात में चंद्र दर्शन के बाद पूर्ण होता है।

सुहागिन नारियाँ करवाचौथ का व्रत बडी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती हैं। शास्त्रों के अनुसार यह व्रत पति की दीर्घायु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। इस दिन पूरे दिन उपवास रखकर रात में चन्द्रमा को अर्घ्य देने के उपरांत ही भोजन करने का विधान है। वर्तमान समय में करवा चौथ व्रत ज्यादातर महिलाएँ अपने परिवार में प्रचलित प्रथा के अनुसार भी मनाती हैं लेकिन नियमानुसार अधिकतर स्त्रियाँ निराहार रहकर चन्द्रोदय की प्रतीक्षा करती हैं। रात्रि के समय छलनी के प्रयोग से चंद्र दर्शन करें और उसे अर्घ्य प्रदान करें फिर पति के पैरों को छूते हुए उनका आशीर्वाद लें।

व्रत की विधि

कार्तिक कृष्ण पक्ष की चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी अर्थात उस चतुर्थी की रात्रि को जिसमें चंद्रमा दिखाई देने वाला है, उस दिन अपने सुहाग की आयु, सौभाग्य का संकल्प लेकर दिनभर निराहार रहें। उस दिन भगवान शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा का पूजन शक्कर की चासनी से तैयार किए गए करवे अथवा तांबे या मिट्टी के बने हुए करवों में लड्डू रखकर नैवेद्य अर्पित करें। करवा चौथ के दिन को करक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है। करवा या करक एक छेद वाले पात्र को कहते हैं जिससे चन्द्रमा को जल अर्पित किया जाता है जोकि अर्घ कहलाता है। पूजा के दौरान करवा बहुत महत्वपूर्ण होता है और इसे ब्राह्मण या किसी मान्य वृद्ध महिला को दान में भी दिया जाता है। एक लोटा, एक वस्त्र व एक विशेष करवा दक्षिणा के रूप में अर्पित कर पूजन समापन करें। करवा चौथ व्रत की कथा पढ़ें अथवा सुनें।

सायंकाल चंद्रमा के उदित हो जाने पर चंद्रमा का पूजन कर अर्घ्य प्रदान करें। अपने से उम्र में बड़ों को या महिलाएँ अपनी सास को पूजा में अर्पित किया हुआ चीनी का करवा, वस्त्र या कोई पात्र भेंट कर आशीर्वाद लें। यदि वे जीवित न हों तो उनके तुल्य किसी अन्य स्त्री को भेंट करें।

करवा चौथ की कथा

बहुत समय पहले की बात है एक साहूकार के सात बेटे और उनकी एक बहन करवा थी। सभी सातों भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। यहाँ तक कि वे पहले उसे खाना खिलाते और बाद में स्वयं खाते थे।

एक बार उनकी बहन ससुराल से मायके आई हुई थी। शाम को भाई जब अपना काम करके घर आए तो देखा उनकी बहन बहुत व्याकुल थी। सभी भाई खाना खाने बैठे और अपनी बहन से भी खाने का आग्रह करने लगे लेकिन बहन ने बताया कि उसका आज करवा चौथ का निर्जल व्रत है और वह खाना सिर्फ चंद्रमा को अर्घ्य देकर ही खा सकती है। चंद्रमा अभी तक नहीं निकला है इसलिए वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठी है।

सबसे छोटे भाई को अपनी बहन की हालत देखी नहीं गई और वह दूर पीपल के पेड़ पर एक दीपक जलाकर चलनी की ओट में रख देता है। दूर से देखने पर वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चतुर्थी का चाँद उदित हो रहा हो। इसके बाद भाई अपनी बहन को बताता है कि चाँद निकल आया है तुम उसे अर्घ्य देने के बाद भोजन कर सकती हो। बहन खुशी के मारे सीढ़ियों पर चढ़कर चाँद को देखती है

उसे अर्घ्य देकर खाना खाने बैठ जाती है। वह पहला टुकड़ा मुँह में डालती है तो उसे छींक आ जाती है। दूसरा टुकड़ा डालती है तो उसमें बाल निकल आता है और जैसे ही तीसरा टुकड़ा मुँह में डालने की कोशिश करती है तो उसके पति की मृत्यु का समाचार उसे मिलता है। वह बेचैन हो जाती है।

उसकी भाभी उसे सच्चाई से अवगत कराती है कि उसके साथ ऐसा कैसे हुआ। करवा चौथ का व्रत गलत तरीके से टूटने के कारण देवता उससे नाराज हो गए हैं और उन्होंने ऐसा किया है।

सच्चाई जानने के बाद करवा निश्चय करती है कि वह अपने पति का अंतिम संस्कार नहीं होने देगी और अपने सतीत्व से उन्हें पुनर्जीवन करके ही रहेगी। वह पूरे एक साल तक अपने पति के शव के पास बैठी रहती है। उसकी देखभाल करती है। एक साल बाद फिर करवा चौथ का दिन आता है। उसकी सभी भाभियाँ करवा चौथ का व्रत रखती हैं। जब भाभियाँ उससे आशीर्वाद लेने आती हैं तो वह प्रत्येक भाभी से ''मुझे भी अपनी जैसी सुहागिन बना दो'' ऐसा आग्रह करती है लेकिन हर बार भाभी उसे अगली भाभी से आग्रह करने को कहकर चली जाती है।

इस प्रकार जब छठे नंबर की भाभी आती है तो करवा उससे भी यही बात दोहराती है। यह भाभी उसे बताती है कि चूँकि सबसे छोटे भाई की वजह से उसका व्रत टूटा था अतः उसकी पत्नी में ही शक्ति है कि वह तुम्हारे पति को दोबारा जीवित कर सकती है। इसलिए जब वह आए तो तुम उसे पकड़ लेना और जब तक वह तुम्हारे पति को जिंदा न कर दे उसे नहीं छोड़ना। ऐसा कहकर वह चली जाती है।

सबसे अंत में छोटी भाभी आती है। करवा उनसे भी सुहागिन बनने का आग्रह करती है लेकिन वह आनाकानी करने लगती है। इसे देख करवा उन्हें जोर से पकड़ लेती है और अपने सुहाग को जिंदा करने के लिए कहती है। भाभी उससे छुड़ाने के लिए कोज़िज़ करती है लेकिन करवा नहीं छोड़ती है।

अंत में उसकी तपस्या को देख भाभी पसीज जाती है और अपनी छोटी अँगुली को चीरकर उसमें से अमृत उसके पति के मुँह में डाल देती है। करवा का पति तुरंत श्री हरि-श्री हरि कहता हुआ उठ बैठता है। इस प्रकार प्रभु कृपा से उसकी छोटी भाभी के माध्यम से करवा को अपना सुहाग वापस मिल जाता है। हे श्री गणेश! माँ गौरी! जिस प्रकार करवा को चिर सुहागिन हाने का वरदान आपसे मिला है वैसा ही सब सुहागिनों को मिले।

करवा चौथ की अन्य कथा

एक समय की बात है कि एक करवा नाम की पतिव्रता स्त्री अपने पति के साथ नदी के किनारे के गाँव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। स्नान करते समय वहाँ एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। वह मनुष्य करवा-करवा कह के अपनी पत्नी को पुकारने लगा।

उसकी आवाज सुनकर उसकी पत्नी करवा भागी चली आई और आकर मगर को कच्चे धागे से बाँध दिया। मगर को बाँधकर यमराज के यहाँ पहुँची और यमराज से कहने लगी- हे भगवन! मगर ने मेरे पति का पैर पकड़ लिया है। उस मगर को पैर पकड़ने के अपराध में आप अपने बल से उसे मृत्यु दुड दो।

यमराज बोले- अभी मगर की आयु शेष है अतः मैं उसे नहीं मार सकता। इस पर करवा बोली अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आप को श्राप दे दूँगी। सुनकर यमराज डर गए और उस पतिव्रता करवा के साथ आकर मगर को यमपुरी भेज दिया और करवा के पति को दीर्घायु दी। हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पति की रक्षा की वैसे सबके पतियों की रक्षा करना।

करवा चौथ की अन्य कथाएँ

एक बार पांडु पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी नामक पर्वत पर गए। इधर द्रोपदी बहुत परेशान थीं। उनकी कोई खबर न मिलने पर उन्होंने कृष्ण भगवान का ध्यान किया और अपनी चिंता व्यक्त की। कृष्णभगवान ने कहा-बहना, इसी तरह का प्रश्न एक बार माता पार्वती ने शंकरजी से किया था। तब शंकरजी ने माता पार्वती को करवा चौथ का व्रत बतलाया। इस व्रत को करने से स्त्रियाँ अपने सुहाग की रक्षा हर आने वालेसंकट से वैसे ही कर सकती हैं जैसे एक ब्राह्मण ने की थी।

प्राचीनकाल में एक ब्राह्मण था। उसके चार लड़के एवं एक गुणवती लड़की थी।एक बार लड़की मायके में थी, तब करवा चौथ का व्रत पड़ा। उसने व्रत को विधिपूर्वक किया। पूरे दिन निर्जला रही। कुछ खाया-पीया नहीं, पर उसके चारों भाई परेशान थे कि बहन को प्यास लगी होगी, भूख लगी होगी, पर बहन चंद्रोदय के बाद ही जल ग्रहण करेगी।

भाइयों से न रहा गया, उन्होंने शाम होते ही बहन को

बनावटी चंद्रोदय दिखा दिया। एक भाई पीपल की पेड़ पर छलनी लेकर चढ़ गया और दीपक जलाकर छलनी से रोशनी उत्पन्न कर दी। तभी दूसरे भाई ने नीचे से बहन को आवाज दी- देखो बहन, चंद्रमा निकल आया है, पूजन कर भोजन ग्रहण करो। बहन ने भोजन ग्रहण किया।

भोजन ग्रहण करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। अब वह दु:खी हो विलाप करने लगी, तभी वहाँ से रानी इंद्राण ाी निकल रही थीं। उनसे उसका दुख न देखा गया। ब्राह्मण कन्या ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दु:ख का कारण पूछा तब इंद्राणी ने बताया- तूने बिना चंद्र दर्शन किए करवा चौथ का व्रत तोड़ दिया इसलिए यह कष्ट मिला।

अब तू वर्ष भर की चौथ का व्रत नियमपूर्वक करना तो तेरा पति जीवित हो जाएगा। उसने इंद्राणी के कहे अनुसार यह व्रत किया तो वह पुन: सौभाग्यवती हो गई। इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत करना चाहिए। द्रोपदी ने यह व्रत किया और अर्जुन सकुशल मनोवांछित फल प्राप्त कर वापस लौट आए। तभी से हिन्दू महिलाएँ अपने अखंड सुहाग के लिए करवा चौथ व्रत करती हैं। ❐

राजू की 'मां'

■ राजेंद्र मित्तल, दिल्ली

एक स्कूल में एक अध्यापिका पांचवी क्लास तक के बच्चों को पढ़ाती थी। वह जब भी क्लास में प्रवेश करती तब 'लव यू' बोला करती थी, लेकिन एक समस्या यह थी कि उसको अपनी क्लास का एक बच्चा, जिसका नाम राजू था, बिल्कुल भी पसंद नहीं था। कारण राजू के कपड़े ठीक नहीं होते थे। वह किसी से कुछ बोलता भी नहीं था। सर झुकाए बैठा रहता था। मैडम ने राजू की परीक्षा की प्रगति रिपोर्ट भी वैसी ही बनाई, जैसी वह सोचती थी। प्रगति रिपोर्ट स्कूल के प्रिंसिपल के पास पहुंची तो प्रिंसिपल ने मैडम को बुलाया और बोला मैडम राजू के बारे में कुछ तो अच्छा लिख देतीं, ताकि उसके पिताजी देखकर थोड़ा मुस्कुराते। लेकिन मैडम ने एकदम कड़क आवाज में बोला यह बच्चा वैसा ही है जैसे मैंने लिखा है। प्रिंसिपल राजू को जानते थे। उन्होंने उसकी दूसरी तीसरी की रिपोर्ट अगले दिन चपरासी द्वारा उसकी क्लास में मैडम की टेबल पर रखवा दी। राजू दूसरी और तीसरी में प्रथम आया था। इसके साथ ही उस पर उसके घर की स्थिति के बारे में जानकारी थी। कैसे उसकी मां बीमार हुई और धीरे-धीरे कैंसर का शिकार हो गई और अंत में वह दुनिया छोड़कर चली गई। इस कारण राजू निराश हो गया और उसके जीवन से प्रकाश गायब हो गया और उदास रहने लगा। उसकी पुरानी प्रगति रिपोर्ट देखकर मैडम पश्चाताप करने लगीं।

अगले दिन उन्होंने जैसे ही क्लास में प्रवेश किया तो राजू को बुलाया, लेकिन राजू बैठा रहा। इसके बाद मैडम ने राजू के मनोबल को बढ़ाने वाले अनेक काय्र शुरू किए। उसके लिए बच्चों से ताली बजवाती थीं। कुछ अन्य कार्य के लिए प्रेरित करती थीं। धीरे-धीरे राजू के बाल, कपड़े, नहाना सब ठीक होने लगा और धीरे-धीरे वही राजू मैडम के सवाल का जवाब सही उत्तर देकर उदाहरण के साथ समझने भी लगा। समय बीतता गया। राजू पांचवीं पास करके पढ़ाई की तरफ आगे बढ़ता गया और हर महीने राजू का एक खत मैडम के नाम आता। मैडम सब कुछ अच्छा है, लेकिन आप जैसी कोई नहीं। इस तरह पत्रों के कर्म की गति चलती रही और साल के दिन बीतते रहे। लगातार पत्रों का सिलसिला चलता रहा और एक दिन मैडम की ईमेल पर एक चिट्ठी आई। चिट्ठी में लिखा था मैडम मेरी इस महीने के अंत में शादी है। आपको जरूर आना है- आपका डॉक्टर राजू। इतना सुनकर मैडम खुशी के मारे उछल पड़ीं। मैडम विमान से उनके विवाह में भाग लेने गईं। विमान देर से पहुंचा तो उन्हें लगा कि विवाह हो गया होगा। लेकिन जब वह पहुंचीं तो देखा कि राजू गेट पर खड़ा है। जैसे ही वह दरवाजे पर पहुंचीं, तो राजू उनके पैरों में पड़ गया और हाथ पकड़ कर सीधा मंच की ओर ले गया। सबको बताया कि आज जिसका इंतजार था और मैंने आपको कहा था कि मैं अपनी मां से मिलवाऊंगा, देखो मेरी दुनिया की सबसे अच्छी मां आज मंच पर मौजूद हैं, आज मैं जो भी हूं मेरी इस मां की वजह से हूं। इतना कहते ही मैडम के आंसू खुशी से छलक पड़े और दोनों मां बेटा गले मिलकर इतने खुश हुए और शादी समारोह बड़ी खुशी से समापन हुआ। ❐

मेरा घर ही स्वर्ग है

■ गंगा प्रसाद सुमन

ग्राम निवासी मोहित की सर्विस दिल्ली में क्लर्क के पद पर हो गई थी। उसका सीधा-सादा स्वभाव था, साधारण व्यक्तित्व, नेक नीयत, ईमानदार, सन्तोषी, मन में कर्तव्यनिष्ठा थी। कार्यालय में उसी कर्म परायणता तथा मधुर व्यवहार की सभी सराहना करते थे। अपनी सामान्य आय से ही अपने परिवार का गुजारा करता रहा।

लेकिन घर में उसकी पत्नी मीरा मोहित को हमेशा ताने मारती रहती, 'पड़ोसन के पास तो अच्छी-अच्छी साड़ियां हैं, तरह-तरह के आभूषण हैं, उसका निजी मकान है, जिसको उसने सजा कर रखा हुआ है, उसके यहां तो कार भी है, रंगीन टी.वी. है। हर माह वह पति के साथ तीर्थयात्रा और पिकनिक भी करने जाती रहती है और एक तुम हो जो आधुनिकता का नामोनिशान नहीं रखते। मेरी आशा और अभिलाषाओं को पूरा भी नहीं कर पाते। मुझे उपेक्षाओं ने घेर कर रख दिया है।'

मोहित यह सब कुछ शान्त भाव से सुनता रहता, केवल इतना ही कह पाता, 'हमें दूसरों से अपने जीवन-यापन की तुलना नहीं करनी चाहिए। सन्तोष ही सबसे बड़ा धन हैं, हम हजारों से खराब हैं तो लाखों से अच्छे भी हैं।'

पत्नी मीरा अपनी किस्मत को कोसती रहती, 'आपके किराए का मकान भी ऐसा है, जिसमें सुविधाओं का नितान्त अभाव हैं। पड़ोसी का बेटा तो कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ रहा है और हमारा बेटा कमेटी के स्कूल में पढ़ाई करता है। आगे चलकर न जाने उसका क्या भविष्य बनेगा, ईश्वर ही जाने। तुमसे पीछे आने वाले कर्मचारी प्रमोशन भी पा गए और तुम अपनी सज्जनता और भोलेपन के कारण वहीं के वहीं हो।'

मोहित कुछ भी उत्तर न दे पाता, लेकिन वह इतना अवश्य दुहराता, 'हम हजारों से खराब हैं तो लाखों से अच्छे भी हैं। वर्तमान में जो प्राप्त है, उसी में सन्तोष कर ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।'

समय बीतता गया। एक दिन मीरा ने सुना कि पड़ोसी का बेटा जो डॉक्टर बनकर अमेरिका प्रस्थान कर गया है, वह अपनी माँ की भयंकर बीमार होने पर भी भारत नहीं आया। माँ चिर प्रतीक्षा करती रही, लेकिन उसने दवा के लिए रुपए तो भेज दिए किन्तु फोन पर कह दिया, 'मैं आने में असमर्थ हूं, पिताजी हैं तो सही तुम्हारे पास।' मीरा मन मसोस कर रह गई। उसने अनुभव किया ऐसे पुत्र से क्या उम्मीद और क्या आशा?

एक दिन मीरा अपने पति के साथ मंदिर से लौट रही थी। रास्ते में उसकी दृष्टि एक भिखारी पर पड़ी, जिसके दोनों हाथ कटे हुए थे, मुख से कटोरा पकड़े हुए भीख मांग रहा था। मीरा ने आगे देखा तो एक ओर कोढ़ी था जिसके शरीर पर कोढ़ के दाग थे, हाथ फैलाए रोटी की याचना कर रहा था। एक सूरदास लाठी टेकता हुआ सड़क पार करना चाहता था। मीरा यह सब कुछ दृश्य देखकर ठिठक गई। गुमसुम होकर स्तब्ध थी, कुछ कह न सकी।

एक रात मीरा अपने पति के साथ एक विवाह समारोह से लौट रही थी, रात के 12 बजे थे। उसने अवलोकन किया कि सड़क के किनारे पटरी पर कुछ लोग शीत ऋतु में सिकुड़ते हुए सोए पड़े हैं। कुछ लोगों के शरीर चिथड़ों में लिपटे हुए हैं। दिसम्बर का महीना है, खुला आसमान है, ओस की बूंदें शिथिल शरीर पर पड़ रही हैं। सोने वालों में बच्चे भी हैं, महिलाएं भी हैं। जाड़े में हर रात उन्हें ऐसे ही बितानी पड़ती है।

मीरा पीड़ा भरे हृदय से सब कुछ देख रही थी, वह मूर्तिवत शिथिल हो चुकी थी। मीरा सोच रही थी कि मैं तो अपने को संसार में किस्मत की मारी, दीन-हीन, दुखी असहाय समझती थी, लेकिन इस दुनिया में दुखों का कोई अन्त नहीं है। ये लोग तो हमसे अधिक दुखी, अभावग्रस्त, विवश और लाचार हैं। मेरे पास तो सब कुछ है, ईश्वर का दिया हुआ- हमारा यह सुन्दर स्वस्थ शरीर, आज्ञाकारी पुत्र, नेक नीयत, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, सन्तोषी मन व सीधा-सरल स्वभाव पति।

मेरे परिवार में तो सुख-शान्ति, धैर्य और परस्पर सहयोग का साम्राज्य है, कोई अभाव नहीं। स्वर्ग की तो कल्पना मात्र की गई है लेकिन मेरा घर ही वास्तव में स्वर्ग समान है।

दूसरों के दुख दर्द, कष्ट, पीड़ा को हम अनुभव करें तो हमारे भी कष्ट, कलेश आतुरता का कोलाहल समाप्त हो जाएगा। अपने तक सीमित न रहकर अपने दृष्टिकोण को हम व्यापक बनाएं तो स्वत: ही सुख की अनूभूति होगी। 'मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।' ❐

सेवा से बढ़ता जा रहा है यशपाल जी का यश

■ अंजू पांडेय

दुनिया की सबसे अच्छी बात वही है,
जो किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट ला दे,
और सबसे अच्छा काम वो है,
जो किसी के जीवन को खुशियों से भर दे।

इन्हीं विचारों को अपने जीवन में सार्थक करने का काम किया यशपाल गुप्ता जी ने। यशपाल जी एक बड़े व्यवसायी और समाज-सेवक हैं। 'शेयर इंडिया' नाम से उनकी कंपनी है। इस कंपनी में जितने लोग भी काम करते हैं वे सब हमेशा मुस्कुराते हुए ही मिलते हैं।

पंजाब का 'पेरिस' कहे जाने वाले कपूरथला में यशपाल जी का जन्म हुआ। भरा-पूरा परिवार ईश्वर की कृपा से कोई कमी नहीं। बचपन से ही स्वयंसेवक रहे यशपाल जी की पढ़ाई पूरी होते ही पैसे कमाने की चाह उन्हें दिल्ली ले आई। दिल्ली में काम ढूंढने आये तीनों भाइयों ने मिलकर 'शेयर इंडिया' के नाम से एक कंपनी शुरू की।

आज वे बहुत बड़े व्यवसायी हैं और हजारों लोगों को रोजगार भी दे रखा है। कंपनी का नाम 'शेयर इंडिया' रखने के पीछे का भाव बताते हुए यशपाल जी कहते हैं कि जो कुछ भी हमारे पास हो उसे दूसरों को 'शेयर' करना अर्थात् बांटना चाहिए फिर चाहे वो शिक्षा हो, धन हो या किसी भी प्रकार का सहयोग। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने अपनी कंपनी में 27 दिव्यांग लोगों को भी रोजगार दिया है, जिसमें महिलाएं और पुरुष दोनों हैं। इतना ही नहीं, उन दिव्यांग लोगों में से कुछ लोगों का तो वे विवाह भी करवा चुके हैं।

उनके यहां नौकरी करने वाले जितने भी लोग हैं उन सबके बच्चों की पढ़ाई का खर्च तथा उनके परिवार की भी पूरी देखभाल कंपनी के माध्यम से की जाती है।

संस्कार केंद्र प्राथमिक विद्यालय

यशपाल जी बताते हैं कि मेरे बच्चों को एक युवा शिक्षक पढ़ाने आते थे। वे बिहार से थे। उन्होंने गांव में शिक्षा के अभाव तथा निरक्षरता के दुष्प्रभाव से मुझे अवगत कराया। तब मेरे मन में विचार आया कि यदि होनहार बच्चों को साधन उपलब्ध करवाया जाए तो वे अवश्य सफल होंगे जिससे गांव की तकदीर और तस्वीर दोनों बदल सकती है।

बस फिर क्या था उन्होंने बिहार के गोपालगंज जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में एक संस्कार केंद्र प्रारंभ किया। इस संस्कार केन्द्र में बच्चों को लाना भी किसी युद्ध से कम नहीं था, क्योंकि वहां के बच्चे तो पढ़ना ही नहीं चाहते थे। शायद उन्हें पढ़ाई का महत्व नहीं मालूम था, पर जब कुछ बच्चों ने पढ़ना शुरू किया तो गांव वालों को भी समझ में आया कि पढ़ाई की आवश्यकता हर बच्चे को है। और यहीं से संस्कार केंद्र खोलने की शुरुआत हुई।

सृजनशाला (शताक्षी सेवा संस्थान के सहयोग से)

2021 में पहला संस्कार केंद्र शुरू हुआ और देखते ही देखते 5 केंद्र और प्रारंभ हो गए। आज इन संस्कार केन्द्रों में कुल 700 से अधिक बच्चे पढ़ते हैं और यहां पढ़ने के बाद

वे स्कूल भी जाते हैं। इन बच्चों को पढ़ने से लेकर उनके कपड़े, जूते, स्कूल बैग, कॉपी-किताब सब कुछ 'शेयर इंडिया फाउंडेशन' की ओर से उपलब्ध करवाया जाता है। गोपालगंज के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से यह प्राथमिक विद्यालय एक पहल है। यहां पढ़ने वाले बच्चों को शिक्षा के अलावा संस्कार, योग, मंत्र उच्चारण तथा एक ठोस आधार मिलता है जिससे उनके व्यक्तित्व में विकास होता है। इस प्रयास के बहुत ही अच्छे परिणाम परिलक्षित भी हुए हैं।

शिक्षा की किरण (शेयर इंडिया स्माइल फाऊंडेशन द्वारा संचालित)

जीवन में किसी भी अभाव के कारण कोई भी व्यक्ति अपने सपनों को पूरा करने तथा अपनी प्रतिभा दिखाने और देश के हित में अपना योगदान देने से पीछे ना रह जाए। इस विचार को लेकर, सिविल सेवा परीक्षा के लिए उम्मीदवारों को सशक्त व उनके स्तर को और व्यापक बनाकर प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से इस प्रोजेक्ट को 2024 में करोलबाग दिल्ली में शुरू किया गया। वे छात्र जो किसी भी कारण से आई.ए.एस., पी.सी.एस. की तैयारी करने के बाद इंटरव्यू में रह जाते हैं उन्हें फिर से मौका मिले। वे और अच्छी तैयारी कर सकें इसलिए सारी सुविधाओं से युक्त इंस्टिट्यूट में ऐसे उम्मीदवारों को प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र यहीं पर रहते हैं और अपनी पढ़ाई करते हैं उन्हें भोजन, कपड़े यहां तक कि जूते भी इस इंस्टीट्यूट के द्वारा ही दिए जाते हैं। 32 छात्रों का पहला बैच शुरू हुआ, जिसमें से 9 छात्रों का चयन सिविल सेवा में हो गया।

अब पंजाब के कपूरथला में एक अस्पताल बनाने की योजना है। उस अस्पताल में आंखों का सबसे बेहतर इलाज हो, ऐसी परिकल्पना के साथ काम प्रारंभ हो गया है।

आशा है कि यह सेवा रथ यूं ही आगे बढ़ता रहे और आपके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक सेवा कार्य से लोग लाभान्वित होकर आपके जैसे ही समाज के सहयोगी बनें और राष्ट्र हित में अपना योगदान दें, जिससे एक सशक्त समाज का निर्माण हो, सके इसी अपेक्षा के साथ... ❐

विनम्रता और सम्मान का प्रतीक है नमस्ते

नमस्ते भारत का एक पारंपरिक अभिवादन है, जिसका अर्थ है-मैं तुम्हें नमन करता हूँ। यह एक आदरपूर्ण और सम्मानजनक हावभाव है, जिसमें दोनों हथेलियों को हृदय के पास जोड़कर और हल्का-सा सिर झुकाकर अभिवादन किया जाता है। इसका गहरा आध्यात्मिक अर्थ है कि मेरे अंदर की दिव्यता आपके अंदर की दिव्यता का सम्मान करती है। 'नमस्ते' शब्द संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है नमः और ते। नमः का अर्थ है 'झुकना' या 'नमन करना'।

ते का अर्थ है 'तुम्हें'। नमस्ते सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक हावभाव है, जो लोगों के मिलने और बिछुड़ने पर उपयोग होता है। यह इशारा दर्शाता है कि हम सभी समान हैं और एक-दूसरे की दिव्यता का सम्मान करते हैं। नमस्ते का सबसे गहरा अर्थ यह है कि हम व्यक्ति के अंदर के ईश्वरीय अंश का सम्मान करते हैं। यह विनम्रता, सम्मान और प्रेम का प्रतीक है और एक गहरी आपसी समझ को बढ़ावा देता है।

- डॉ. संगीता त्यागी

मुझे सेवा भारती ने संवारा

■ राज मंगल, शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय, पोर्ट ब्लयेर

मैं एक निर्धन परिवार से था। मेरे पिता जी रिक्शाचालक थे था माता जी मजदूरी करती थीं। हमारा परिवार सेक्टर-20 की एक सेवा बस्ती, जिसका नाम जनकपुरी कैम्प है,में रहता था।

मैं जब तीसरी कक्षा में पढ़ रहा था, उस समय की बात है। एक दिन माता जी छुट्टी पर थीं। तभी दो बहनें दीपा दीदी और सीमा दीदी गली में आयीं और उन्होंने मेरी माता जी से पूछा आपके बच्चे कहाँ पढ़ते हैं और ट्यूशन कहाँ जाते हैं। मेरी माता जी ने बताया कि मेरे दो-दो बच्चे हैं। एक तीसरी तथा एक पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है और उसके अलावा बाकी कहीं अन्य जगह पढ़ने नही जाते, क्योंकि अन्य जगह पर फीस ज्यादा होती है।

उन दोनों ने सेवा भारती के अंदर चल रहे बाल संस्कार केंद्र के बारे में बताया एवं हम दोनों भाइयों का नाम उसके लिए लिख कर ले गईं। अगले दिन से हम दोनों भाई वहां जाने लगे। वहाँ हमें कक्षा प्रारम्भ होने से पहले वन्दे मातरम्, सरस्वती वंदना, गायत्री मंत्र, गीत, हनुमान चालीसा सुभाषित आदि कराया जाता। उसके उपरान्त ही कक्षा प्रारम्भ होती।

सेवा भारती में जाने से हमें रोज कुछ नया सीखने को मिलता। इसी तरह बाल संस्कार केंद्र में जाते हुए हमें दो साल हो गए और फिर हम सेवा भारती के अंदर चलने वाली कोचिंग, जो कि शाम को 6 से 8 बजे की होती थी, में जाने लगे। वहां हमें गणित श्री वेदपाल गुरु जी और अंग्रेजी श्री राम सिंह वशिष्ट गुरु जी पढ़ाते थे। वहाँ की पढ़ाई के कारण मेरे बड़े भाई का प्रवेश छात्रावास अशोक विहार में हो गया जो कि पूरी तरह निशुल्क था। वहाँ रहना, खाना, पढ़ना आदि। परन्तु भाई का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने के कारण उन्हें दो वर्ष बाद ही वापिस घर पर ही आना पड़ा। मेरी पढ़ाई सेवा भारती में ही चलती रही।

वहाँ समय-समय पर अलग-अलग लोग आते और सेवा भारती तथा अन्य सेवा प्रकल्पों के बारे बताते जो सेवा भारती के माध्यम से होते थे जैसे हमारी सेवा भारती में सुबह एक दवाखाना होता था, जिसमें केवल पाँच रुपये के नाम मात्र की फीस पर दवाई दी जाती थी। दिन में बाल संस्कार केंद्र के साथ-साथ सिलाई केन्द्र भी चलाया जाता था।

इसी तरह समय बीतता गया। मेरी पढ़ाई का स्तर भी बहुत अच्छा हो गया। कक्षा पाँच में मैंने अपनी कक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया और कक्षा छह में पूरे विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके लिए मुझे विद्यालय तथा सेवा भारती दोनों में सम्मानित किया गया।

हमारे श्री राम सिंह गुरु जी हमें रविवार के दिन शाखा ले जाते जिसे मेरा संघ प्रवेश हुआ मेरे साथ-साथ बहुत सारे ऐसे बच्चे थे जो हमारी सेवा बस्ती से सेवा भारती और शाखा दोनों जगह जाते थे।

शाखा से जुड़ने के बाद और साथ-साथ सेवा भारती की पढ़ाई दोनों के माध्यम से हमारे परिवार और हमारे जीवन में बहुत परिवर्तन आए। मैंने अपनी 10 वीं तक की परीक्षा सेवा भारती में पढ़कर पूरी की और हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर रहता। इस कारण कई लोग मुझसे व मेरे परिवार से पूछते तो हम सेवा भारती के बारे में बताते थे। कई बच्चे वहां पढ़ने आते थे।

नाम मात्र के शुल्क में शिक्षा और संस्कार देने का काम जो सेवा भारती करती है शायद ही कोई अन्य संस्था करती है। आज मै केंद्रीय विद्यालय, पोर्ट ब्लयेर में शिक्षक के पद पर कार्यरत हूँ। अगर मैं या मेरा परिवार सेवा भारती से नही जुड़ा होता तो यह निश्चित है मैं यहाँ नहीं होता। मैं और मेरा परिवार सदैव सेवा भारती का आभारी रहेगा। ❐

शाखा से जुड़ने के बाद और साथ-साथ सेवा भारती की पढ़ाई दोनों के माध्यम से हमारे परिवार और हमारे जीवन में बहुत परिवर्तन आए। मैंने अपनी 10 वीं तक की परीक्षा सेवा भारती में पढ़कर पूरी की और हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर रहता।

मनाया गया 'सुपोषित भारत सप्ताह'

पूर्वी विभाग

राष्ट्रीय सेवा भारती का एक प्रकल्प सितम्बर माह में 'सुपोषित भारत 'नाम से आयोजित किया जाता है। दिल्ली प्रान्त सेवा भारती के सौजन्य से पूर्वी विभाग के प्रत्येक जिले के केन्द्रों पर 'सुपोषित भारत सप्ताह' धूमधाम से मनाया गया। 15 सितंबर को चित्रकला प्रतियोगिता, 16 सितंबर को निबन्ध प्रतियोगिता, 17 सितंबर को नाटक एवं नुक्कड़ नाटक, 18 सितंबर को बच्चों के लिए गोष्ठी, 19 सितंबर को किशोरियों एवं महिलाओं के लिए गोष्ठी, 20 सितंबर को स्वास्थ्य जांच शिविर और 22 सितंबर को प्रभात फेरी एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ।

20 सितंबर को जिला इंद्रप्रस्थ में सुपोषित अभियान के तहत एनीमिया कैंप लगाया गया। दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कैंप की तैयारी दो महीने पहले से चल रही थी। समृद्धि मनराल, पीएएचडीए छात्रा न्यूट्रिशियन और सेवा भारती की शिक्षिका निरीक्षक ने बस्ती में सर्वे किया और बस्ती के लोगों से उनका खानपान और अन्य बातें पूछीं। 238 लोगों के खून की जांच हुई। इसमें 30 महिलाओं का विटामिन बी 12 और अन्य टेस्ट हुआ। जिनका हीमोग्लोबिन 8 या 9 था या जिनका 14 और 15 था। सभी की गोष्ठी की गई। यह गोष्ठी लेडी इरविन कॉलेज की न्यूट्रिशन की छात्राओं ने की। अंत में कुंदन जी द्वारा बस्ती में दोबारा सर्वे किया गया। इस कार्य में लेडी इरविन कॉलेज के 2 प्रोफेसर, छात्राएं, एम्स के डॉक्टर, लैब टेक्नीशियन, रेडक्लिफ टीम आदि का सहयोग रहा। प्रांत से कुंदन जी, कमल देव प्रसाद जी विभाग से माधुरी जी और जिला इंद्रप्रस्थ के कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

विभिन्न विषयों पर निबन्ध प्रतियोगिता कराई गई। क्या फल सब्जी खाने चाहिए, उन पर बच्चों ने चित्र बनाए। अगले दिन शिक्षिकाओं के द्वारा नुक्कड़ नाटक किया गया। उद्देश्यपूर्ण छोटे नाटकों में बच्चों का प्रदर्शन अत्यंत प्रभावी रहा। सेवित जनों से स्वस्थ जीवन जीने का प्रण लिया गया। बच्चों ने अपनी आयु और समझ के अनुसार शिक्षिका के साथ दोहराया। इसके साथ ही मैक्स अस्पताल के डॉक्टर के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर लगाए गए। जेए जेए कैंप में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एसएकेए अग्रवाल ने महिलाओ की समस्याओं, बीमारियों और पोषक तत्वों की जानकारी दी।

केशवपुरम विभाग

गत 22 सितंबर को केशवपुरा विभाग के सरस्वती विहार जिले में सुपोषित भारत अभियान चलाया गया, जिसमें राजीव गांधी हॉस्पिटल के डॉक्टर श्रीमान बृजेश भाई साहब जी, शकूरपुर के नगर अध्यक्ष, निरीक्षिका जी, व सभी केंद्रों की शिक्षिका बहनें सम्मिलित हुई। डॉ बृजेश जी ने मेडिकल लैंग्वेज और सरल भाषा दोनों तरीकों से लोगों को जागरूक

किया कि छोटे-छोटे अपने घरेलू उपाय व योग से अपने शरीर को कैसे स्वस्थ बनाया जा सकता है। सरस्वती विहार जिले के सात केंद्रों पर सुपोषित भारत अभियान गोष्ठियों का आयोजन किया गया। सभी केंद्रों की संख्या को मिलाकर 380 की संख्या रही, जिसमें महिलाएं 180, पुरुष 40 और बच्चे 160 रहे। सेवा भारती का लक्ष्य है कि भारत सुपोषित रहे, नागरिक स्वस्थ, जागरुक और आत्मनिर्भर बनें।

उत्तम जिला

उत्तम जिले में 15-21 सितम्बर तक सुपोषित भारत सप्ताह पूरे उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सभी केंद्रों पर बच्चों और महिलाओं को पोषण शिक्षा से जोड़ने वाले विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। जैसे चित्रकला प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं बाल गोष्ठियों के दौरान बच्चों ने आपस में चर्चा कर यह जाना कि संतुलित आहार और स्वच्छता से वे कैसे निरोग और ऊर्जावान रह सकते हैं। सप्ताह के अंत में आयोजित बाल स्वास्थ्य शिविर में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया तथा विशेषज्ञों ने उन्हें पौष्टिक आहार लेने के साथ-साथ दैनिक स्वच्छता अपनाने के सरल उपाय बताए। इसी क्रम में महिलाओं के लिए भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें पोषण, एनीमिया की रोकथाम और स्थानीय

स्तर पर उपलब्ध पौष्टिक आहार के महत्व पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया गया। यह पूरा सप्ताह बच्चों और महिलाओं में जागरूकता लाने और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का संदेश छोड़ गया। इस अवसर पर सभी ने मिलकर संकल्प लिया-'सही पोषण, देश रोशन।' ❐

मंगोलपुरी में ईएनटी वार्ड का शुभारंभ

गत 22 सितंबर को नवरात्रि के पहले दिन स्वामी विवेकानंद मेडिकल मिशन एफ ब्लॉक मंगोलपुरी केंद्र में ईएनण्टीए (नाक, कान और गला) वार्ड का शुभारंभ किया गया। इसमें विभाग सह संगठन मंत्री श्रीमान दीपक जी, विभाग अध्यक्ष श्रीमान राजेंद्र जी, जिला अध्यक्ष श्रीमान सतवीर जी, उपाध्यक्ष श्रीमान जितेंद्र वाधवा जी, जिला मंत्री श्रीमती शशि ग्रोवर जी, कोषाध्यक्ष अध्यक्ष श्रीमान ज्ञान जी, नगर प्रमुख श्रीमान शिव भगवान जी उपस्थित रहे।

तिलक, पुष्प वर्षा और श्रीमान राजेंद्र जी के द्वारा डॉक्टर साहब को माला पहनाकर उनका स्वागत किया गया और ससम्मान उन्हें उनके कक्ष तक ले जाया गया। वहां पर पूजा-अर्चना कर सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। डॉक्टर रमेश वशिष्ठ जी प्रसिद्ध ईएनण्टीए विशेषज्ञ हैं। वे डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में 35 साल तक अपनी सेवाएं दे चुके हैं। सेवानिवृत्ति के बाद वे सेवा भारती को अपनी सेवाएं देने के लिए उपलब्ध हैं। यहां सुबह 10:00 बजे से दोपहर 1:00 तक लोगों के लिए सेवा उपलब्ध है। शुल्क केवल 40 रु है और यह कार्ड 15 दिन के लिए मान्य होगा। सप्ताह में तीन दिन सोमवार, बुधवार व शुक्रवार को कोई भी इस सेवा का लाभ ले सकता है। ❐

मना शिक्षक दिवस

लायंस क्लब और सेवा भारती का सामूहिक कार्यक्रम

गत 4 सितंबर को केशवपुरम विभाग के सरस्वती विहार जिले में शिक्षक दिवस मनाया गया। लायंस क्लब और सेवा भारती का सामूहिक कार्यक्रम हुआ। इसमें मुख्य अतिथि श्रीमान योगेश वर्मा जी (अध्यक्ष, शिक्षा समिति दिल्ली सरकार) रहे। सेवा भारती से विभाग अध्यक्ष श्रीमान मुकेश गोयल जी, विभाग मंत्री श्रीमान रामसेवक जी, सरस्वती विहार जिला अध्यक्ष श्रीमान प्रमोद अग्रवाल जी, जिला कोष प्रमुख श्रीमान नरेश जी, निरीक्षिका सुनीता जी, शिक्षिका बहनें और एम सी डी स्कूल के स्टॉफ सम्मिलित हुए। सबसे पहले दीप मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। फिर सरस्वती वंदना, भाषण, नाटक, नृत्य, गीत, रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। मुख्य अतिथि और अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने शिक्षकों को पटका पहनाकर सम्मानित किया गया। साथ ही शिक्षकों को प्रमाणपत्र और उपहार दिए गए। विभाग अध्यक्ष श्री मुकेश जी ने लायंस क्लब के बारे में और विभाग मंत्री श्रीमान रामसेवक जी ने सेवा भारती के बारे में बताया। जलपान के पश्चात कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में कुल संख्या 140 रही।

शिक्षक दिवस पर प्रारंभ हुए ट्यूशन सेंटर

पूर्वी विभाग में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर पांच ट्यूशन सेंटर खोले गए। नेहरू कैम्प में ट्यूशन सेंटर का उद्घाटन श्री गजेंद्र जी के द्वारा किया गया। बच्चों की संख्या-8 है। सोनिया विहार और मजदूर बस्ती में अध्यापन का कार्य शिक्षक रमेश जी के सहयोग से प्रारम्भ किया गया। 'सी ब्लॉक' पेट्रोल पम्प के पीछे भी कोचिंग सेंटर का शुभारंभ किया गया।

स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प में शिक्षक दिवस

गत 5 सितंबर को स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, सेवा भारती, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में शिक्षक दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। इस कार्यक्रम में पूरे दिन कक्षा के वरिष्ठ बालक बालिकाओं ने शिक्षक-शिक्षिका की भूमिका निभाई। छात्र-छात्राओं ने शिक्षा की क्या भूमिका होती है इस बात को भली-भांति समझा। कार्यक्रम के उपरांत सभी शिक्षक-शिक्षिका बने बच्चों के साथ उनकी कक्षा के अध्यापक-अध्यापिकाओं का सामूहिक चित्र खींचा गया। इस प्रकार शिक्षक दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। ❒

उन्नति की ओर अग्रसर हिमांशु और आरव

हिमांशु तथा आरव गाड़िया लोहार समाज से हैं। दोनों ही भाई हैं। इनके माता-पिता का नाम विक्की तथा नैना है। इन दोनों भाइयों की आयु क्रमश: 17 और 15 वर्ष है। बड़ा वाला भाई 11वीं कक्षा में है तथा छोटा भाई आरव 10वीं कक्षा में है। पहले ये दोनों जब क्रमश: छठवीं तथा पांचवीं कक्षा में थे तब इनके माता-पिता को इनके भविष्य की बहुत चिंता थी। वे चाहते थे कि उनके बच्चे आगे बढ़ें और खूब पढ़ें, किन्तु उनके पास दिशा का अभाव था कि कैसे बच्चों को सही दिशा दी जाए।

पंडित मदन मोहन मालवीय मिशन के संपर्क में आना

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों ने वर्ष 2014 में मदन मोहन मालवीय मिशन के नाम से एक समिति का गठन किया। इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) की इकाई में इस संस्था का मुख्य कार्य गाड़िया लोहार समाज के बच्चों को शिक्षित करना तथा रोजगार दिलाना था। इसी समिति के तहत साल 2016 में हिमांशु तथा आरव की गाड़िया लोहार बस्ती (ख्याला, तिलक नगर), जहां पर वे रहते थे, में एक संस्कार केंद्र शुरू हुआ। जब वे दोनों बच्चे उस केंद्र से जुड़े तब उनके माता-पिता की दुविधा थोड़ी दूर हुई, क्योंकि वहां बच्चों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन करने के नए नए अवसर मिलते। वे उस केंद्र में अपने विद्यालय की पढ़ाई का तो अभ्यास करते ही साथ ही अन्य गतिविधियां भी उन्हें करने को मिलती। वे अपने अपने स्तर पर ही उन गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व करना सीखते थे। आर्ट एवं क्राफ्ट सीखते तथा कम संसाधनों और विषम परिस्थितियों में भी अपने काम को कैसे सुचारू रूप से करना है यह सीखते।

आर्थिक अभाव का भय

जब हिमांशु कक्षा 8 में तथा आरव कक्षा 7 में हुआ तब उनके माता-पिता की और चिंता बढ़ गई। क्योंकि वे जानते थे उनके बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं, और उनको आगे बढ़ाने के लिए उन्हें अच्छे विद्यालय में पढ़ा रहे थे। इसके लिए उन्होंने कर्ज भी लिया और कुछ सहायता उन्हें विद्यालय की ओर से भी मिलती, पर वह विद्यालय केवल 8वीं तक का ही था। और उनके माता-पिता को लगा कि अब बच्चों को सरकारी विद्यालय में पढ़ाना पड़ेगा और जैसा माहौल उनके वहां के स्थानीय विद्यालय का था उन्हें यह भी भय था कि कहीं बच्चे बिगड़ न जाएं। तब हिमांशु और आरव के मामा रोहित द्वारा उन्हें विद्या भारती के विद्यालय का पता चला। तथा डॉ शैलेन्द्र विक्रम जी तथा अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा समर्थ शिक्षा समिति में बच्चों की पढ़ाई में अर्थ रुकावट न बने इस विषय पर बात की गई तब एक समाधान निकल कर आया।

समर्थ शिक्षा समिति, सेवा भारती तथा माता पिता का सहयोग

समर्थ शिक्षा समिति में बात करने पर यह समाधान निकला। चूंकि शिक्षा यदि फ्री कर दी जाए तो उसे इतना महत्व नहीं दिया जाएगा तथा माता-पिता के स्वाभिमान का भी कहीं न कहीं हनन होगा। इसलिए माता-पिता को भी कुछ राशि अपने बच्चों की शिक्षा के लिए देनी चाहिए और अंतत: यह तय हुआ कि बच्चे की शिक्षा पर खर्च होने वाली प्रत्येक माह की फीस में 1000 रुपए उसके माता-पिता 1000 सेवा भारती तथा शेष राशि समर्थ शिक्षा समिति द्वारा दी जाएगी। आज इसी के तहत विद्या भारती के विद्यालयों में 24 गाड़िया लोहारों के बच्चे पढ़ रहे हैं।

आगे की दिशा

हिमांशु तथा आरव का प्रवेश "महाशय चुन्नी लाल", हरि नगर में हुआ। चूंकि वे दोनों मेधावी छात्र थे तथा प्रवेश परीक्षा भी उत्तीर्ण की और क्रमश: 8वीं तथा 7वीं में दोनों का प्रवेश हुआ। आज हिमांशु 11वीं कक्षा का छात्र है एवं प्रत्येक वर्ष अपनी कक्षा में अव्वल नंबरों से उत्तीर्ण होता है और वर्तमान में जेईई परीक्षा की तैयारी कर रहा है तथा साइंस मॉडल भी बनाया जो शायद आगे प्रतियोगिता के लिए चिन्हित होगा। छोटा भाई आरव एथलीट है। वह अभी तक स्कूल से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक 14 गोल्ड तथा 3 सिल्वर मेडल जीत चुका है। वह रनिंग, रैली रेस तथा बेसबॉल खेलता है और देश के विभिन्न राज्यों में अपने मैचों के लिए जाता रहता है। यह भी अनुमान है कि दिल्ली सरकार की तरफ से उसका चयन स्कूल गेम्स फेडरेशन आफ इंडिया के लिए किया जा सकता है।

दोनों भाइयों का यह मानना है कि सेवा भारती के संपर्क में आने के बाद उनका जीवन बदल गया। उन्हें विद्या भारती के विद्यालय में प्रवेश के बाद काफी कुछ सीखने को मिला तथा दोनों के ही व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है। ❑

– सिमरन

आनंद विहार में कार्यकर्ता मिलन

वर्षो बाद गत 4 सितंबर वृहस्पतिवार को बहन अंजलि अजय जी के निवास आनन्द विहार में दोपहर के भोजन का आयोजन रहा। इसमें 25 वर्ष पुरानी यादें ताजा करने का मौका मिला। इसमें कुछ कार्यकर्ताओं को याद किया गया, जो अब हमारे बीच नहीं रहे और तीन कार्यकर्ता दिल्ली से बाहर होने के कारण आ नहीं सके। कार्यक्रम में श्री रणवीर जी गुप्ता, श्री रघुराज जी, श्री सतीश जी कैली, श्री रवि रुस्तगी, श्री राजेन्द्र सोलंकी, श्री गुलशन जी, श्री आलोक वर्मा जी, श्रीमती वीना महतो, श्रीमती संगीता अरोड़ा जी एवं अंजलि अजय जी ने मिलकर अपने बढ़ते परिवार का परिचय एक-दूसरे को दिया। रघुराज जी ने दो संघ गीत बोलकर आनन्द दुगुना कर दिया। रवि रुस्तगी जी ने श्रीमती अंजलि जी के लिए कुछ शब्द कहे। यह आयोजन एक यादगार बन गया और सभी ने आगे निरन्तर मिलने का आग्रह किया है।

बता दें कि आज से लगभग 25 वर्ष पहले सेवा भारती के लगभग 20 कार्यकर्ताओं की एक टोली बनी और उस टोली में पूर्वी दिल्ली के दोनों विभागों के कार्यकर्ता थे। एक मस्ती की धुन में काम करने का जुनून था और हम सबने मिलकर विभिन्न जोशीले अंदाज में कार्यक्रम किए। जैसे तीन साल लगातार सेवा बस्तियों में कुस्ती का मैच, जिसमें 8 टीम होती थी, कराया। अन्त में प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीनों को पुरस्कार और बाकी अन्य टीमों को भी पुरस्कृत किया जाता था। लगभग 5,000 सेवित जनों का सामूहिक भोजन रहता था। बहुत ही आकर्षक कार्यक्रम रहता था। एक बार

सेवा बस्तियों की विभिन्न श्रेणियों की दौड़ और सहभोज का आयोजन हुआ। हमारे समय में ही पहला सामूहिक कन्याओं के विवाह का आयोजन पूर्वी दिल्ली में माननीय श्री जगदीश राय जी की अध्यक्षता में हुआ और फिर लगातार हुआ। उस समय पूरी सेवा भारती की टीम बहुत जोशीले अंदाज में कार्यक्रम आयोजित करती थी। हर बैठक एक नये कार्यकर्ता के निवास पर होने के कारण परिवारिक परिचय रहता था। लगातार 5-6 वर्षों तक सामूहिक मोतियाबिंद के आपरेशन के कैम्प दानदाताओं के माध्यम से आयोजित हुए।

अनेक बार स्वास्थ्य जांच शिविर भी आयोजित किए गए, जिनमें हर बार लगभग 20-25 सेवित जनों को लाभ मिलता था। हम सभी का परिवारिक मिलन का निरन्तर कार्यक्रम रहता था।

उपरोक्त कार्यक्रम से फिर एक बार नई आस जगी है। ❐

बाढ़ पीड़ितों की मदद

गत 11 सितम्बर को सेवा भारती के कार्यकर्ताओं द्वारा बाढ़ पीड़ित (पाकिस्तान से विस्थापित हिन्दू) 232 परिवारों को प्रात: 6:00 बजे दुग्ध व बिस्कुट 400 पैकेट वितरित किये गये। बाढ़ पीड़ितों की सेवा करने में डॉ. राकेश वत्स का बड़ा योगदान रहा। उनके साथ उनकी टीम राम प्रकाश जी, सुभाष जी,हरवीर जी, वीरपाल जी, तीरथ राम जी, राजेन्द्र जी, गौरव जी, धर्मेश जी, ऋषिपाल जी, सुरेश जी, विभाग के कोष प्रमुख श्रीमान अनिल दत्त जी, भारत जी एवं विभाग मंत्री गवेन्द्र जी लगे रहे। ❒

सरदार से जुड़ी एक घटना

एक गांव में कुछ विद्यार्थी प्रतिदिन दूसरे गांव की पाठशाला में एक साथ आते-जाते और वहां से लौटते थे। एक दिन वापस लौटते समय सभी साथ चल रहे थे। उनमें से देखा एक विद्यार्थी पीछे रह गया। सब उसको देखने गए और आवाज लगाई। उसने कहा मैं काम कर रहा हूं। और जब वहां जाकर देखा तो वह विद्यार्थी बीच रास्ते में लगा एक खूंटा उखाड़ रहा था। सबने मिलकर कहा यह क्या कर रहे हो! उसने कहा कि यह खूंटा बीच रास्ते में गड़ा हुआ है आने-जाने वाले ठोकर खाकर गिर जाते हैं। इसलिए मैं इसको उखाड़ रहा था। यह देखकर सभी बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। यह विद्यार्थी कोई और नहीं सरदार वल्लभ भाई पटेल थे, जो हमारे देश के पहले गृहमंत्री थे। ❒

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

रघुबीर नगर में शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग

केशवपुरम विभाग द्वारा 13 सितंबर को विभाग कार्यालय, रघुबीर नगर में शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग 2025 का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। यह वर्ष का दूसरा कार्यक्रम था। कार्यक्रम में कुल 5 सत्र थे। तीन सामूहिक और दो गटानुसार। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमान संजय गर्ग द्वारा की गई और उन्होंने दैनिक कार्यों में व्यावहारिक महत्वों पर प्रकाश डाला। गटानुसार सत्र श्रीमती वीना गर्ग, श्रीमती सलोनी मल्होत्रा, श्रीमती मुस्कान पांडे और श्री नवीन गीरी जी ने लिया। अंतिम सामूहिक सत्र सुश्री अंजू पांडेय जी ने लिया। उन्होंने प्रशिक्षण की समीक्षा और किशोरी विकास पर चर्चा की। श्रीमान कौशल जी ने आपदा प्रबंधन के बारे में बताया। प्रशिक्षण में भाग लेने वाली शिक्षिकाओं की कुल संख्या 90 रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान मुकेश गोयल ने की और व्यवस्था में विभाग और जिलों के कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। ❐

बुद्ध विहार में शिक्षिका अभ्यास वर्ग

गत 13 सितंबर को संत गाडगे सेवा भारती केंद्र, बुद्ध विहार में शिक्षिका अभ्यास वर्ग रहा। पहले सत्र में पांच वर्ष से वरिष्ठ शिक्षिकाओं को प्रातः स्मरण का अभ्यास कराया एवं महात्म भी बताया गया। शेष शिक्षिकाओं को दैनिक प्रार्थना एवं सरस्वती वंदना का सही उच्चारण एवं क्रम से अभ्यास कराया गया। दूसरे सत्र में विभाग सहमंत्री सुदीप जी ने सुपोषण सप्ताह में करणीय कार्य एवं योजनाबद्ध रूप से मनाने के बारे मे विस्तार से जानकारी दी एवं संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम के बारे में भी बताया। विभाग शिक्षा एवं स्वावलंबन प्रमुख श्याम तायल जी ने स्वयं सहायता समूह वैभव श्री का विषय लिया और सभी को स्वयं सहायता समूह कैसे बनाएं, प्रक्रिया एवं योग्यता आदि के विषय में समझाया। अंत में कल्याण मंत्र हुआ एवं सभी ने जलपान ग्रहण किया। शिक्षिका एवं निरीक्षिका की उपस्थिति 36 एवं कुल उपस्थिति 45 रही। ❐

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 अक्टूबर, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 अक्टूबर, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

वृन्दावन दर्शन यात्रा

केशव छात्र निकेतन के छात्रों के लिए 30-31 अगस्त तक वृंदावन एवं गोवर्धन की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा सफलतापूर्वक आयोजित की गई। सभी छात्रों को श्री बांकेबिहारी, श्रीराधा बल्लभ एवं गोवर्धन जी की परिक्रमा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस यात्रा का आयोजन एवं प्रायोजन ललित जी (कोषाध्यक्ष, झंडेवालान विभाग) द्वारा किया गया। ललित जी के इस सहयोग से बच्चों को एक अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त हुआ। ललित जी का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

– दिनेश कुमार (मंत्री, सेवा भारती केशव छात्र निकेतन) ❐

कुष्ठाश्रम के लिए सहयोग

कुष्ठआश्रम प्रकल्प, ताहिरपुर, सेवा भारती द्वारा संचालित बालवाड़ी संस्कार केन्द्र एवं डिसस्पेन्सरी के लिए श्री आनन्द कुमार जी, डॉ. हरेन्द्र जी को सहयोग राशि भेट करते हुए। श्री आनन्द जी समय-समय पर सहयोग करते हैं। इस पुनीत कार्य में सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। ❐

दो कचरा, लो करेंसी

भोपाल नगर निगम ने समाज के सामने एक अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। 'कचरा कैफे' की पहल से अब लोग अपने घरों का कचरा या कबाड़ कहीं फेंकने के बजाय सीधे कैफे ले जा सकते हैं। यहां उस कचरे का वजन करके लोगों को 'कचरा करेंसी' दी जाती है। इस करेंसी से कोई भी व्यक्ति भोजन, नाश्ता, चाय-कॉफी, यहाँ तक कि आवश्यक राशन सामग्री जैसे आटा, दाल, चावल आदि प्राप्त कर सकता है। यह पहल केवल कचरे के निपटान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जिम्मेदारी और मानवता का भी सुंदर उदाहरण है। शहर साफ-सुथरा बने, पर्यावरण संरक्षित रहे और साथ ही ज़रूरतमंदों का पेट भरे, यही इस योजना का मूल उद्देश्य है। कचरा कैफ़े का संदेश स्पष्ट है- कचरा अब बोझ नहीं, बल्कि संसाधन है। स्वच्छता केवल सफाईकर्मियों का नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। समाज के कमजोर वर्ग की मदद रचनात्मक तरीकों से भी की जा सकती है। यदि देश के अन्य शहर भी इस अनूठी पहल को अपनाएँ, तो स्वच्छ भारत अभियान को नई दिशा मिलेगी और साथ ही 'कचरा से खजाना' बनाने की प्रेरणा हर नागरिक तक पहुँचेगी। स्वच्छता से ही समृद्धि और संवेदनशीलता का मार्ग प्रशस्त होता है। भोपाल का कचरा कैफे इस दिशा में एक सशक्त कदम है। ❐

द्वारा : रंजना शर्मा

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।